सूरह अश्शु'अरा

तम्हीदी कलिमात

सूरतुल फुरक़ान के तम्हीदी कलिमात के ज़िमन में बताया जा चुका है कि इस ग्रुप की आठ मक्की सूरतों में से सूरतुल फुरक़ान के अलावा बाक़ी सबका आग़ाज़ हुरूफ़-ए-मुक़त्तआत से होता है। इनमें से दो सूरतों (अश्शु'अरा और अल क़सस) का आग़ाज़ ता'सीन'मीम से, एक सूरत (अल नहल) का ता'सीन से और चार सूरतों (अल अनकबूत, अल रोम, लुक़मान और अल सजदा) का आग़ाज़ अलिफ़'लाम'मीम से होता है। इस ज़िमन में इज़ाफी तौर पर ये भी नोट कर लीजिये कि क़ुरान की कुल छह सूरतें अलिफ़'लाम'मीम से शुरू होती हैं, जिनमें से सूरतुल बक़रह और सूरह आले इमरान मदनी हैं, जबकि मज़कूरह चार मक्की हैं।

सूरतुश्शौरा को मक्की सूरतों में इस ऐतबार से इम्तियाज़ हासिल है कि इसकी आयात की तादाद (227) मक्की सूरतों में सबसे ज़्यादा है। (हुज्म के ऐतबार से मक्की सूरतों में सूरतुल आराफ़ सबसे बड़ी है, लेकिन उसकी आयात 207 हैं।) सूरतुश्शौरा अपनी छोटी-छोटी आयात, तेज़ रिधम और मौअसर सूती आहंग की बिना पर सूरतुल हिज्र से मुमासलत रखती है। इसकी आयत 214 के हवाले से तारीख़ी रिवायात मिलती हैं जिनसे मालूम होता है कि इस सूरत का नुज़ूल इब्तदाई चार बरस के दौरान हुआ था। वैसे तो इब्तदाई दौर में नाज़िल होने वाली अक्सर व बेशतर सूरतें मुसहफ़ की तरतीब में सूरह क़ाफ़ के बाद यानि आख़री मंज़िल में रखी गई हैं, लेकिन सूरतुल हिज्र और सूरतुश्शौरा को मशीयते इलाही से मुसहफ़ के दरमियानी हिस्से में रखा गया है, यानि पिछले ग्रुप में सूरतुल हिज्र और इस ग्रुप में सूरतुश्शौरा।

मेरे ख्याल में इस तरतीब में ये हिकमत है (मुमकिन है कोई और बड़ी हिकमत भी हो, जिस तक मेरे फ़हम की रसाई ना हो) कि इन दोनों ग्रुप्स में यके के बाद दीगरे बहुत सी ऐसी सूरतें हैं जो अपने अंदाज़ और मज़ामीन के ऐतबार से एक जैसी हैं। चुनाँचे एक जैसी सूरतों की वजह से पैदा होने वाली यक्सानियत को ख़त्म करने के लिये दोनों ग्रुप्स में मुख्तलिफ़ अंदाज़ की एक-एक सूरत शामिल कर दी गई है ताकि तिलावत के दौरान इंसान की दिलचस्पी में कमी वाक़ेअ ना होने पाए। सूरतुश्शौरा का ज़्यादातर हिस्सा अम्बिया अर्रुसुल पर मुशतमिल है और इसमें भी उन्हीं छह रसूलों और उनकी क़ौमों के वाक़िआत की तफ़सील है जिनका ज़िक्र इससे पहले सूरतुल आराफ़ और सूरह हूद में भी आ चुका है। अलबत्ता इस सूरत में इन वाक़िआत की तरतीब मुख्तलिफ़ है और हज़रत इब्राहिम अलै. के ज़िक्र का इज़ाफ़ा भी है। सबसे पहले हज़रत मूसा अलै. का मुफ़स्सल तज़किरा है, फिर हज़रत इब्राहिम अलै. का ज़िक्र है, इसके बाद बाक़ी पाँच रसूलों के हालात बिल्कुल उसी तरतीब से बयान हुए हैं जिस तरतीब से मज़कूरह दोनों सूरतों में उनका ज़िक्र मिलता है। सूरत का आख़री रुकूअ ख़ासा तवील है जिसमें हुज़ूर ﷺ से ख़िताब है और आपकी वसातत से दरअसल अहले ईमान को मुखातिब किया गया है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

आयात 1 से 9 तक

طٰسٓمٓ ۝١ تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفۡسَكَ اَلَّا يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ۝٣ اِنۡ نَّشَاۡ نُنَزِّلۡ عَلَيۡهِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتۡ اَعۡنَاقُهُمۡ لَهَا خٰضِعِيۡنَ ۝٤ وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ ذِكۡرٍ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ مُحۡدَثٍ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهُ مُعۡرِضِيۡنَ ۝٥ فَقَدۡ كَذَّبُوۡا فَسَيَاۡتِيۡهِمۡ اَنۡۢبٰٓؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝٦ اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الۡاَرۡضِ كَمۡ اَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِيۡمٍ ۝٧ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۝٨ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝٩

आयत 1

طٰسٓمٓ ۝١

"ता,सीन,मीम।"

आयत 2

تِلۡكَ اٰيٰتُ الۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ۝٢

"ये रौशन किताब की आयात हैं।"

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفۡسَكَ اَلَّا يَكُوۡنُوۡا مُؤۡمِنِيۡنَ ۝٣

"(ऐ नबी □!) शायद आप अपने आप को हलाक कर देंगे इस सदमे में कि ये लोग ईमान नहीं ला रहे।"

اِنۡ نَّشَاۡ نُنَزِّلۡ عَلَيۡهِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتۡ اَعۡنَاقُهُمۡ لَهَا خٰضِعِيۡنَ ۝٤

"अगर हम चाहें तो इन पर अभी आसमान से एक ऐसी निशानी उतार दें जिसके सामने उनकी गरदनें झुक कर रह जाएँ।"

इन्हें ऐसी कोई निशानी दिखा देना हमारी क़ुदरत से कुछ बईद नहीं, लेकिन अपनी ख़ास हिकमत और मशियत के तहत हम ऐसा नहीं कर रहे। आगे चल कर इसी सूरत में इस हिकमत का ज़िक्र भी आएगा।

وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ ذِكۡرٍ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ مُحۡدَثٍ اِلَّا كَانُوۡا عَنۡهُ مُعۡرِضِيۡنَ ۝٥

"और इनके पास रहमान की तरफ़ से कोई नई नसीहत नहीं आती मगर ये लोग उससे ऐराज़ करने वाले ही होते हैं।"

इन्हें मुख्तलिफ़ अंदाज़ से समझाया जा रहा है, अन्दाज़ बदल-बदल कर आयात नाज़िल की जा रही हैं, मगर ये लोग हैं कि किसी नसीहत और किसी याद दिहानी से असर लेने को तैयार ही नहीं।

فَقَدۡ كَذَّبُوۡا فَسَيَاۡتِيۡهِمۡ اَنۡۢبٰٓؤُا مَا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝٦

"तो अब जबकि वह झुठला चुके हैं तो अनक़रीब इन तक पहुँच जाएँगी ख़बरें उस चीज़ की जिसका ये लोग मज़ाक़ उड़ाया करते थे।"

यानि अज़ाबे इलाही के ज़रिये अनक़रीब इनकी पकड़ होने वाली है।

"क्या ये लोग ज़मीन को नहीं देखते कि इसमें हमने किस क़दर उम्दा चीज़ें उगाई हैं हर क़िस्म की!"

اَوَلَمۡ يَرَوۡا اِلَى الۡاَرۡضِ كَمۡ اَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ زَوۡجٍ كَرِيۡمٍ ۝C

"यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है। लेकिन इनकी अक्सरियत ईमान लाने वाली नहीं है।"

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۝D

अगर ये लोग मौज़ज़ा देखना चाहते हैं तो देख लें, अल्लाह तआला की तख्लीक़ करदा पूरी कायनात ही मौज़ज़ा है। कायनात में हर जगह इनके लिये निशानियाँ ही निशानियाँ हैं:

اِنَّ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَالۡفُلۡكِ الَّتِىۡ تَجۡرِىۡ فِى الۡبَحۡرِ بِمَا يَنۡفَعُ النَّاسَ وَمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡيَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَبَثَّ فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصۡرِيۡفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَيۡنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝١٦٤

"यक़ीनन आसमानों और ज़मीन की तख्लीक़ में, रात और दिन के उलट-फ़ेर में, और किश्तियों (जहाज़ों) में जो समन्दरों (या दरियाओं) में लोगों के लिये नफ़ा बख्श सामान लेकर चलती हैं, और उस पानी में जो अल्लाह ने आसमान से उतारा है, फिर उससे ज़िन्दगी बख्शी ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद और हर क़िस्म के हैवानात उसके अंदर फैला दिये, और हवाओं की गर्दिश में, और उन बादलों में जो मौअल्लक़ कर दिये गए हैं आसमानों और ज़मीन के दरमियान, यक़ीनन निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो अक़्ल से काम लें।"

"और यक़ीनन आपका रब बहुत ग़ालिब, निहायत रहम करने वाला है।"

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝D

यहाँ एक नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि क़ुरान में आमतौर पर अल अज़ीज़ के साथ अल्लाह तआला का दूसरा सिफाती नाम अल हकीम आता है, मगर इस सूरत में अल अज़ीज़ अर्रहीम की तकरार है। दरअसल इसका मक़सूद ये मालूम होता है कि अल्लाह तआला अगरचे "अल अज़ीज़" है यानि ज़बरदस्त ताक़त का मालिक है, वह जो चाहे करे मगर साथ ही साथ वह निहायत मेहरबान, शफीक़ और रहीम भी है। अगर अल्लाह तआला चाहे तो पलक झपकने में आसमान से ऐसा मौज़ज़ा उतार दे जिसके सामने इन्हें अपनी गर्दनें झुकाने के सिवा चारा ना रहे। जैसा कि क़ब्ल अज़ आयत 4 में फ़रमाया गया है: { اِنۡ نَّشَاۡ نُنَزِّلۡ عَلَيۡهِمۡ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتۡ اَعۡنَاقُهُمۡ لَهَا خٰضِعِيۡنَ } "अगर हम चाहें तो उन पर अभी आसमान से एक ऐसी निशानी उतार दें जिसके सामने उनकी गरदने झुक कर रह जाएँ। चुनाँचे ये अल्लाह तआला की रहमत का अज़ीम मज़हर है कि वह फ़ौरी तौर पर कोई हिस्सी मौज़ज़ा दिखा कर इन लोगों की मुद्दते मोहलत को ख़त्म नहीं करना चाहता। वह चाहता है कि इस दूध को कुछ देर और बिलो लिया जाए, शायद कि इसमें से कुछ मज़ीद मक्खन निकल आए। शायद इनमें भलाई की इस्तेदाद रखने वाले मज़ीद

कुछ लोग मौजूद हों और इस तरह इन्हें भी राहेरास्त पर आने का मौक़ा मिल जाए। बहरहाल इस वजह से इनके मुसलसल मुतालबे के बावजूद भी इन्हें मौज़ज़ा नहीं दिखाया जा रहा था, मगर वह नादान अपने इस मुतालबे के पूरा ना होने को आप ﷺ के ख़िलाफ़ एक दलील के तौर पर इस्तेमाल कर रहे थे।

आयात 10 से 51 तक

وَاِذْ نَادٰي رَبُّكَ مُوْسٰٓي اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝10 قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۭ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝11 قَالَ رَبِّ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝12
وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝13 وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝14 قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ
مُّسْتَمِعُوْنَ ۝15 فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝16 اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝17 قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا
وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۝18 وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝19 قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّاۗلِّيْنَ ۝20
فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝21 وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝22 قَالَ
فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝23 قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝24 قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝25 قَالَ
رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝26 قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ۝27 قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝28 قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰــهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝29 قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۝30 قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝31 فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝32 وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَاۗءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝33 قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ
عَلِيْمٌ ۝34 يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ڰ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝35 قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝36 يَاْتُوْكَ بِكُلِّ
سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝37 فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝38 وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝39 لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ
الْغٰلِبِيْنَ ۝40 فَلَمَّا جَاۗءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَىِٕنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝41 قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝42 قَالَ لَهُمْ
مُّوْسٰٓي اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝43 فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ۝44 فَاَلْقٰى مُوْسٰي عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا
يَاْفِكُوْنَ ۝45 فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝46 قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝47 رَبِّ مُوْسٰي وَهٰرُوْنَ ۝48 قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ
لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ڛ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝49 قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ اِنَّآ
اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝50 اِنَّا نَـطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝51

आयत 10

وَاِذْ نَادٰي رَبُّكَ مُوْسٰٓي اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝10

"और याद करो जब पुकारा था आपके रब ने मूसा अलै. को कि जाओ ज़ालिम क़ौम के पास।"

आयत 11

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۭ اَلَا يَتَّقُوْنَ ۝11

"(यानि) क़ौमे फ़िरऔन के पास। क्या वह डरते नहीं?"

आयत 12

قَالَ رَبِّ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝12

"उसने अर्ज़ किया: ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे अंदेशा है कि वह मुझे झुठला देंगे।"

आयत 13

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝13

"और मेरा सीना भिंचता है और मेरी ज़बान भी रवाँ नहीं, लिहाज़ा आप (ये पैग़ाम) हारून की तरफ़ भेजिये!"

ताकि इस अज़ीम मिशन में वह मेरे दस्तो-बाज़ू बने और इस काम में मेरा हाथ बँटाये।

आयत 14

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنۢبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ﴿14﴾

"और मेरे ज़िम्मे उनका एक ज़ुर्म भी है, चुनाँचे मुझे अंदेशा है कि वह मुझे क़त्ल कर देंगे।"

मिस्र में हज़रत मूसा अलै. के हाथों एक क़िब्ती क़त्ल हो गया था। इस वाक़िये की तफ़सील सूरतुल क़सस में आएगी। अगरचे ये क़त्ल अम्द नहीं बल्कि खता था, लेकिन था तो बहरहाल क़त्ल। इसलिये हज़रत मूसा अलै. का अंदेशा दुरुस्त था कि वह उन्हें देखते ही गिरफ़्तार कर लेंगे और मुक़दमा चला कर सज़ा-ए-मौत का मुस्तहिक़ ठहरा देंगे।

आयत 15

قَالَ كَلَّا ۖ فَٱذْهَبَا بِـَٔايَٰتِنَآ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ ﴿15﴾

"अल्लाह ने फ़रमाया: हरगिज़ नहीं! तो तुम दोनों जाओ हमारी निशानियों के साथ, हम यक़ीनन तुम्हारे साथ हैं, सब सुनने वाले हैं।"

आयत 16

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَآ إِنَّا رَسُولُ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿16﴾

"तो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और उसे कहो कि हम रसूल हैं रब्बुल आलमीन के।"

आयत 17

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿17﴾

"कि भेज दो हमारे साथ बनी इसराईल को।"

कि अब तुम बनी इसराईल को मज़ीद तंग ना करो और उन्हें आज़ाद करके हमारे साथ जाने की इजाज़त दे दो।

आयत 18

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ ﴿18﴾

"फ़िरऔन ने कहा कि क्या हमने तुम्हें छोटे होते अपने यहाँ पाला नहीं था? और तुमने अपनी ज़िन्दगी के कई साल हमारे यहाँ गुज़ारे हैं।"

ये क़ुरान का ख़ास अस्लूब है कि कोई वाक़िया बयान करते हुए उसकी ग़ैर ज़रूरी तफ़ासील छोड़ दी जाती है। चुनाँचे यहाँ हज़रत मूसा अलै. के मिस्र पहुँचने और अपने भाई हारून अलै. के साथ फ़िरऔन के दरबार में जाकर

उसे दावत देने से मुताल्लिक़ तमाम तफ़सीलात को छोड़ कर फ़िरऔन के जवाब को नक़ल किया गया है कि क्या तुम वही नही हो जिसको हमने दरिया-ए-नील में बहते हुए संदूक से निकाला था और फिर पाल-पोस कर बड़ा किया था? आयत ज़ेरे मुताअला में क़ुरान के अल्फ़ाज़ का इम्कानी हद तक मुनासिब अंदाज़ में तर्जुमा तो वही है जो ऊपर किया गया है, लेकिन जिस माहौल और जिस अंदाज़ में फ़िरऔन ने ये जुमले कहे होंगे उनका तस्सवुर करें तो मफ़हूम कुछ यूँ होगा कि तुम हमारे टुकड़ों पर पले हो और आज अल्लाह के रसूल बन कर हमारे ही सामने आ खड़े हुए हो। हमारी बिल्ली और हम ही को म्याओं!

[सूरतुल आराफ़ की आयात 104, 105 के ज़ेल में ये वज़ाहत आ चुकी है कि ये वह फ़िरऔन ना था जिसके घर में हज़रत मूसा अलै. ने परवरिश पाई थी, बल्कि ये उसका बेटा था। ज़ेरे मुताअला आयत के अस्लूब से भी इसकी ताईद होती है। अगर ये वही फ़िरऔन होता तो कहता कि मैंने तुझे पाला-पोसा, लेकिन ये कह रहा है कि तू हमारे यहाँ रहा है और हमने तेरी परवरिश की है।]

आयत 19

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ 19

"और तुमने जो अपना वह काम किया जो किया, और तुम नाशुक्रों में से हो।"

फ़िरऔन ने अपने मज़ऊमा (supposedly) अहसानात जतलाने के बाद हज़रत मूसा अलै. को ये भी याद दिला दिया कि तुमने हमारे एक आदमी को भी क़त्ल किया हुआ है। और आखिर में बड़ी रौवनत से कहा कि तुम कितने नाशुक्रगुज़ार और अहसान फ़रामोश हो!

आयत 20

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّاۗلِّيْنَ 20

"मूसा ने कहा: मैंने वह तब किया था जब कि मैं नावाक़िफ़ों में से था।"

यानि ये फ़ेअल मुझसे नादानिस्तगी में हुआ था और उस वक़्त मैं अभी हक़ीक़त से ना-आशना भी था। अभी रिसालत और नबूवत मुझे नहीं मिली थी और मैं खुद तलाशे हक़ीक़त में सरगरदां था। लफ़्ज़ "الضّال" के दो मफ़ाहीम के बारे में सूरतुल फ़ातिहा के मुताअले के दौरान वज़ाहत की जा चुकी है। इस लफ़्ज़ के एक मायने तो रास्ते से भटक जाने वाले और गलतफ़हमी की बिना पर कोई गलत रास्ता इख़्तियार कर लेने वाले के हैं, लेकिन इसके अलावा जो शख्स अभी दुरुस्त रास्ते की तलाश में सरगरदां हो उस पर भी इस लफ़्ज़ का इत्लाक़ होता है और इसी मफ़हूम में ये लफ़्ज़ सूरतुल दुहा की इस आयत में हुज़ूर ﷺ के लिये इस्तेमाल हुआ है: {وَوَجَدَكَ ضَاۗلًّا فَهَدٰى} कि हमने आपको तलाशे हक़ीक़त में सरगरदां पाया तो रहनुमाई फ़रमा दी!

आयत 21

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ

"फिर मैं तुम्हारे यहाँ से भाग गया जब मुझे तुमसे खौफ़ महसूस हुआ"

इस वाक़िये के बाद मैं तुम लोगों से डर कर तुम्हारा ये इलाक़ा छोड़ कर चला गया।

فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ــ21

"फिर मेरे रब ने मुझे हुक्म अता किया और मुझे रसूलों में से बना दिया।"

अब अल्लाह तआला ने मुझे नबूवत व रिसालत से सरफ़राज़ फ़रमाया है और हिकमत और क़ुव्वते फ़ैसला की दौलत भी अता की है।

आयत 22

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۔ــ22

"और ये वह अहसान है जो तुम मुझे जतला रहे हो जिसके एवज़ तुमने बनी इसराईल को गुलाम बना रखा है!"

इन अल्फ़ाज़ के तेवर बता रहे हैं कि हज़रत मूसा अलै. फ़िरऔन को तर्की-ब-तर्की जवाब दे रहे थे कि अपने महल में एक इसराईली बच्चे की परवरिश करने का तुम्हारा अहसान क्या तुम्हें ये जवाज़ फ़राहम करता है कि तुम पूरी बनी इसराईल क़ौम को अपना गुलाम बनाए रखो? मेरी परवरिश करने का कारनामा तो तुम्हें बर-वक़्त याद आ गया लेकिन मेरी क़ौम को जो तुमने गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ रखा है, उसका कोई तज़किरा तुमने नहीं किया। यहाँ عَبَّدْتَّ का लफ्ज़ लायक़े तवज्जो है। تَعْبِید के मायने किसी को गुलाम और फ़रमाबरदार बना लेने के हैं। इसी स्याक़ व सबाक़ में एक दूसरी जगह फ़िरऔन का ये फ़िक़रा इस लफ्ज़ के मफ़हूम को मज़ीद वाज़ेह करता है: {وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ} (मोमिनून 47) "और इन दोनों की क़ौम तो हमारी गुलाम है!"

आयत 23

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ــ23

"फ़िरऔन ने पूछा कि ये रब्बुल आलमीन कौन है?"

तुमने दावा किया है कि तुम रब्बुल आलमीन के रसूल हो और उसकी तरफ़ से भेजे गए हो, तो ये रब्बुल आलमीन कौन है?

आयत 24

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ــ24

"मूसा अलै. ने जवाब दिया: आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के माबैन है उसका आक़ा और मालिक। अगर तुम यक़ीन करने वाले हो!"

आयत 25

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ــ25

"फ़िरऔन ने अपने इर्द-गिर्द लोगों से कहा: क्या आप सुन नहीं रहे?"

इस फिक़रे के सही मफ़हूम और मौक़े व महल को समझने के लिये फ़िरऔन के दरबार का तसव्वुर ज़हन में लाना ज़रूरी है। तसव्वुर कीजिये! दरबार सजा है, तमाम आयाने सल्तनत अपनी-अपनी नशिस्तों पर विराजमान हैं। इस बहरे दरबार में हज़रत मूसा अलै. बराहेरास्त फ़िरऔन से मुख़ातिब हैं और इस गुफ्तुगू को तमाम दरबारी रू-ब-रू सुन रहे हैं। हज़रत मूसा अलै. की तर्की-ब-तर्की गुफ्तुगू और बेबाक लहजे के सामने फ़िरऔन खिसियाना हो चुका है। अपनी इसी खिफ्त को छुपाने के लिये वह हज़रत मूसा अलै. को जवाब देने के बजाय पलट कर अपने दरबारियों की तरफ़ देखता है और उन्हें मुखातिब करते हुए कहता है कि आप लोगों ने सुना, ये क्या कह रहे हैं? बहरहाल हज़रत मूसा अलै. उसके इस अंदाज़ को ख़ातिर में लाए बगैर अपनी गुफ्तुगू जारी रखते हैं:

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ــ26

"उसने कहा कि वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले आबा व अजदाद का भी रब है।"

आयत 27

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ــ27

"फ़िरऔन ने (दरबारियों से) कहा कि तुम्हारा ये रसूल जिसे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है यक़ीनन मजनून है।"

गोया फ़िरऔन मुसलसल हज़रत मूसा अलै. से आँखे चुरा रहा है। आपकी आँखों में आँखे डाल कर जवाब देने के बजाय वह फिर अपने दरबारियों से ही मुखातिब हुआ है। अपनी शर्मिंदगी मिटाने के लिये अब उसने तन्ज़िया अंदाज़ इख़्तियार किया है कि मुझे तो ये साहब जो तुम्हारी तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए हैं मजनून लगते हैं, इनका दिमागी तवाज़ुन ठीक नहीं लगता। हज़रत मूसा अलै. उसकी इस बात को भी नज़रअंदाज़ करके अपनी गुफ्तुगू इसी जोश और बेबाकी के साथ जारी रखते हैं:

आयत 28

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ــ28

"उसने कहा कि वह मशरिक़ व मगरिब का भी रब है और जो कुछ इनके माबैन है उसका भी। अगर तुम अक़्ल रखते हो!"

गोया अब हज़रत मूसा अलै. पूरे तौर पर दरबार पर छाए हुए हैं और दूसरी तरफ़ फ़िरऔन के मकालमात और अंदाज़ से उसकी बेबसी साफ़ नज़र आ रही है। आयात में दर्ज़ मकालमात की मदद से इस पूरे मंज़र को अगर ड्रामाई अंदाज़ में पेश किया जाए तो बहुत दिलचस्प और इबरत अंगेज़

सूरतेहाल की तस्वीर सामने आ सकती है। (मैंने मैडिकल कॉलेज में अपने ज़माना तालिब-ए-इल्मी के दौरान इन आयात के तर्जुमे से ड्रामे का एक स्क्रिप्ट तैयार किया था: "एक रसूल, बादशाह के दरबार में!")

आयत 29

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰـهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ــ29

"उसने कहा कि अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को मअबूद माना तो मैं तुम्हें क़ैदियों में दाख़िल कर दूँगा।"

सूरतेहाल फ़िरऔन की बर्दाश्त से बाहर हो गई तो उसका गुस्सा और मुतलक़ुल अनानियत का जलाल उसकी खिफ्फ़त पर ग़ालिब आ गया। इस कैफ़ियत में उसने गरजते हुए हज़रत मूसा अलै. को धमकी दी, मगर ये क़त्ल के बजाय सिर्फ़ जेल में डालने की धमकी थी। इससे यूँ लगता है जैसे अभी तक फ़िरऔन के दिल में हज़रत मूसा अलै. के लिये कोई नर्म गोशा मौजूद था और ये बिल्कुल फ़ितरी बात थी, क्योंकि वह हज़रत मूसा अलै. का बचपन का साथी था। दोनों इकठ्ठे खेले और एक साथ पले बढ़े थे। हज़रत मूसा अलै. उम्र में बड़े होने की वजह से उसके बड़े भाई की तरह थे।

आयत 30

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ــ30

"मूसा अलै. ने जवाब दिया: अगरचे मैं तुम्हारे पास कोई वाज़ेह चीज़ लेकर आया हूँ?"

आयत 31

قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ــ31

"वह बोला: तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो!"

आयत 32

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ــ32ش

"चुनाँचे मूसा अलै. ने अपना असा डाल दिया तो अचानक वह एक सरीह अज़दाह बन गया।"

वाज़ेह रहे कि सूरह ताहा की आयत 20 में असा की तब्दीली हैइयत के लिये "हय्यतुन" का लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है, जिसके मायने आम साँप के हैं और ये उस वक़्त का ज़िक्र है जब हज़रत मूसा अलै. को वादी-ए-तुआ में पहली बार इसका तजुर्बा कराया गया था। जबकि फ़िरऔन के दरबार में वह "ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ" यानि वाज़ेह तौर पर एक बहुत बड़ा अज़दाह बन गया था।

आयत 33

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۔33

“और उन्होंने अपना हाथ (अपने गिरेबान से) खींचा तो वह सफ़ेद चमकदार था देखने वालों के लिये।”

आयत 34

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۙ۔34

“फ़िरऔन ने अपने इर्द-गिर्द मौजूद सरदारों से कहा ये तो वाक़िअतन एक माहिर जादूगर है।”

कि ये इतना अरसा जहाँ कहीं भी रहा है, जादू सीखता रहा है और लगता है कि इस फन में इसने ख़ूब महारत हासिल कर ली है- और अब:

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ڰ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۔35

“ये चाहता है कि अपने इस जादू के बल पर तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल बाहर करे, तो तुम लोग क्या मशवरा देते हो?”

लुग्वी ऐतबार से “अम्र” के मायने हुक्म के भी हैं और मशवरे के भी, मगर यहाँ ये लफ्ज़ मशवरे के मायने दे रहा है। फ़िरऔन के इस फिक़रे से उसकी तश्वीश साफ़ ज़ाहिर हो रही है। गोया सूरतेहाल उसके अंदाज़े से कहीं बढ़ कर पेचीदा और गंभीर थी।

आयत 36

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۙ۔36

“उन्होंने कहा कि इसको और इसके भाई को कुछ मोहलत दे दें और भेज दें तमाम शहरों में नक़ीब।”

आयत 37

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۔37

“वह ले आएँ आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को।”

हरकारे (messengers) शाही पैग़ाम लेकर पूरे मुल्क में फ़ैल जाएँ, हर जगह ढिंढोरा पीटें और जहाँ-जहाँ से कोई माहिर जादूगर मिले सबको इकठ्ठा करके दरबार शाही में पेश कर दें।

आयत 38

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۙ۔38

“तो यूँ जमा कर लिये गए तमाम जादूगर एक मुक़र्रर दिन के वादे पर।”

आयत 39

"और लोगों से भी कह दिया गया कि क्या तुम जमा हो जाओगे?"

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۙ—39

इसके बाद अवाम में भी मुनादी कराई गई कि वह भी तयशुदा वक़्त के मुताबिक़ मुक़र्रर जगह पर पहुँच जाएँ।

आयत 40

"ताकि हम पैरवी कर लें जादूगरों की अगर वही ग़ालिब रहें।"

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ —40

कि मूसा अगर अपने जादू कर ज़ोर से हमें मरऊब व मगलूब करना चाहता है तो ऐसी सूरत में क्यों ना हम अपनी क़ौम के जादूगरों की सरदारी क़ुबूल करके उनकी पैरवी करें और मूसा की बजाय उनकी पनाह में आ जाएँ!

आयत 41

"तो जब जादूगर आ पहुँचे तो उन्होंने फ़िरऔन से पूछा कि क्या हमें ईनाम मिलेगा, अगर हम ग़ालिब आ गए?"

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَىِٕنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ —41

आयत 42

"उसने कहा ज़रूर! और तब तुम लोग यक़ीनन मुक़र्रबीन में से हो जाओगे।"

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ —42

खलअतें और ईनामात भी मिलेंगे और इसके अलावा तुम लोगों को दरबार में आला मनासिब (posts) अता करके मैं अपने मुक़र्रिब मसाहेबीन में भी शामिल कर लूँगा।"

आयत 43

"मूसा अलै. ने उनसे कहा कि फेंको तुम लोग जो कुछ फेंकने वाले हो!"

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ —43

"तो उन्होंने फ़ेंक डालीं अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ"

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ

"और कहा कि फ़िरऔन की इज्ज़त की क़सम, यक़ीनन हम ही ग़ालिब रहने वाले होंगे!"

وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ —44

आयत 45

فَاَلْقٰى مُوْسٰي عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ؀45ښ

"अब मूसा ने अपना असा फेंका तो यकायक वह निगलने लगा उस फ़रेब को जो उन्होंने बनाया था।"

उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ जो बज़ाहिर साँप दिखाई दे रही थीं, हज़रत मूसा अलै. के असा ने अज़दाह बन कर उन्हें निगलना शुरू कर दिया।

आयत 46

فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۙ؀46

"तो सारे जादूगर बे-इख़्तियार सज्दे में गिरा दिये गए।"

اُلْقِيَ सीगा-ए-मजहूल है, यानि वह सज्दे में ख़ुद नहीं गिरे बल्कि गिरा दिये गए। मतलब ये कि अपने जादू के ज़ाएल होने का मंज़र देख कर वह लोग इस तरह बे-इख़्तियार सज्दों में गिर गए जैसे किसी ने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया हो।

आयत 47

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ؀47

"और कहने लगे कि हम तमाम जहाँनों के रब पे ईमान ले आए हैं।"

आयत 48

رَبِّ مُوْسٰي وَهٰرُوْنَ ؀48

"जो मूसा और हारून का रब है।"

आयत 49

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ

"फ़िरऔन ने कहा: क्या तुम लोग ईमान ले आए हो इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त देता!"

फ़िरऔन पुर जलाल अंदाज़ में गरजा कि तुम्हारी ये जुर्रत कि मा-बदौलत की इजाज़त के बगैर तुम लोगों ने मूसा और हारून के रब पर ईमान लाने का ऐलान कर दिया!

اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

"यक़ीनन ये तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है।"

कि मुझे तुम्हारी साज़िश का पता चल गया है। यक़ीनन ये तुम्हारा उस्ताद और गुरु घंटाल है जिससे तुम जादू सीखते रहे हो। तुम्हारा यहाँ आना और मुक़ाबला करना महज़ एक ढोंग था और अब इससे यूँ तुम्हारा हार मान लेना तुम्हारी बाहमी मिली-भगत और नूराकुश्ती का नतीजा है।

فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۥ

"तो बहुत जल्द तुम्हें (इसका अंजाम) मालूम हो जाएगा।"

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝49

"मैं तुम्हारे हाथ और पाँव काट डालूँगा मुखालिफ़ सिम्त से और तुम सबको सूली पर लटका दूँगा।"

आयत 50

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝50

"उन्होंने कहा: कोई परवाह नहीं! यक़ीनन हम अपने रब की तरफ़ ही लौट कर जाने वाले हैं।"

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ

"यक़ीनन हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी खताओं को बख्श देगा"

अब हमें अगर कुछ तमअ (लालच) है, तो बस यही है और हमारे दिल में अगर कोई ख्वाहिश, कोई आरज़ू और तमन्ना है तो एक ही है, कि हमारा रब हमारी पिछली खताओं से दरगुज़र फरमाए।

اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝51ۄ

"कि हम ही सबसे पहले ईमान लाने वाले हैं।"

कि हमने सबसे पहले अल्लाह के रसूल कि तस्दीक़ की है और कोई दूसरा इस मामले में हम पर सबक़त नहीं ले जा सका।

आयात 52 से 68 तक

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓي اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝52 فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝53 اِنَّ هٰٓؤُلَاۗءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝54 وَاِنَّهُمْ
لَنَا لَغَاۗىِٕظُوْنَ ۝55 وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝56 فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝57 وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝58 كَذٰلِكَ ۭ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ ۝59 فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝60 فَلَمَّا تَرَاۗءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓي اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝61 قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ
سَيَهْدِيْنِ ۝62 فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓي اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۭ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ۝63 وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝64
وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰي وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝65 ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝66 اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝67 وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝68

आयत 52

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓي اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝52

"और हमने वही कर दी मूसा की जानिब कि मेरे बन्दों को रातों-रात निकाल ले जाओ, यक़ीनन तुम्हारा तअक्कुब किया जाएगा।"

आयत 53

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَاۗىِٕنِ حٰشِرِيْنَ ۝53

"तो फ़िरऔन ने तमाम शहरों में (फिर) नक़ीब भेज दिये।"

बनी इसराईल के तअक्क़ुब की गर्ज़ से लोगों को इकठ्ठा करने के लिये पूरे मुल्क में फिर ढिंढोरची और हरकारे भेज दिये गए, ये कह कर कि:

आयत 54

"यक़ीनन ये तो मुठ्ठी भर लोग हैं।" اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۙ—54

आयत 55

"और बिलाशुबह इन्होंने हमारे गुस्से को भड़का दिया है।" وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۙ—55

बनी इसराईल के मिस्र से निकल भागने की हरकत ने हमें गज़बनाक कर दिया है। अब हम उन्हें इबरतनाक सज़ा देंगे। इस आयत के एक मायने ये भी हैं कि "इनके अंदर हमारी वजह से गुस्सा है।" यानि अगरचे ये मुठ्ठी भर लोग हैं लेकिन हम इन्हें जो तकालीफ़ पहुँचाते रहे हैं इस वजह से वह हम पर भरे बैठे हैं। चुनाँचे ये दिल जले लोग हमारे ख़िलाफ़ कुछ भी कर सकते हैं।

आयत 56

"और यक़ीनन हम सब ख़तरे में पड़ने वाले हैं।" وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۖ—56

हमें इनकी तरफ़ से किसी बड़े अक़दाम का अंदेशा है। चुनाँचे हमें अपनी पूरी क़ुव्वत को मुजतमअ करके इनका पीछा करना चाहिये।

आयत 57

"पस यूँ निकाला हमने उन्हें बाग़ात और चश्मों में से।" فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ—57

आयत 58

"और ख़ज़ानों और बहुत उम्दा क़यामगाहों से।" وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۙ—58

इस सूरतेहाल में उन्हें अपने बाग़ात, चश्मे, घरबार, जागीरें वगैरह जिनमें वह खुशहाली और फ़रिगुल बाली की ज़िंदगियाँ बसर कर रहे थे, सब कुछ छोड़ कर निकलना पड़ा।

"इसी तरह हुआ। और इन चीज़ों का वारिस हमने बनी इसराईल को बना दिया।" كَذٰلِكَ ۖ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۖ—59

इसका ये मतलब नहीं कि बनी इसराईल ने बाद में वापस आकर इन सब चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर लिया, बल्कि मुराद ये है कि बाद में बनी इसराईल को

हमने दुनियवी माल व दौलत और इक़तदार से नवाज़ा और एक वक़्त आया कि यही तमाम चीज़ें उन्हें मिल गईं।

आयत 60

"तो उन्होंने उनका तअक्कुब किया सुबह होते ही।"

فَاَتۡبَعُوۡهُمۡ مُّشۡرِقِيۡنَ ﴿60﴾

सुबह की रौशनी होते ही फ़िरऔन और उसके लश्कर बनी इसराईल के तअक्कुब में निकल खड़े हुए।

आयत 61

"फिर जब दोनों गिरोहों ने एक-दूसरे को देखा तो मूसा अलै. के साथियों ने कहा कि अब तो हम पकड़े गए।"

فَلَمَّا تَرَآءَا الۡجَمۡعٰنِ قَالَ اَصۡحٰبُ مُوۡسٰٓى اِنَّا لَمُدۡرَكُوۡنَ ۚ﴿61﴾

जब फ़िरऔनी लश्कर तअक्कुब करते हुए उनके क़रीब पहुँच गया तो बनी इसराईल को अपने पकड़े जाने का यक़ीन हो गया।

आयत 62

"मूसा ने कहा: हरगिज़ नहीं! यक़ीनन मेरे साथ मेरा रब है, वह ज़रूर मेरे लिये रास्ता पैदा कर देगा।"

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىۡ سَيَهۡدِيۡنِ ﴿62﴾

इस आयत के ये अल्फ़ाज़ सूरतुल तौबा की आयत 40 के इन अल्फ़ाज़ से मिलते-जुलते हैं जो हुज़ूर ﷺ ने गारे सौर में हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रजि. को मुखातिब करके फरमाए थे: { لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا } "(ऐ अबुबक्र) आप परेशान ना हों, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है।"

आयत 63

"तो हमने वही की मूसा की तरफ़ कि ज़र्ब लगाओ अपने असा के साथ समन्दर को!"

فَاَوۡحَيۡنَاۤ اِلٰى مُوۡسٰٓى اَنِ اضۡرِبۡ بِّعَصَاكَ الۡبَحۡرَ ؕ

"तो वह फट गया और हर हिस्सा एक बहुत बड़े पहाड़ की तरह हो गया।"

فَانۡفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرۡقٍ كَالطَّوۡدِ الۡعَظِيۡمِ ۚ﴿63﴾

अपने मफ़हूम के ऐतबार से आयत के अल्फ़ाज़ बहुत वाज़ेह हैं, लेकिन इसके बावजूद अगर कोई शख्स इन अल्फ़ाज़ की लायानी तावील करके इस वाक़िये को मद्दो-जज़र क़रार दे तो इसे सिर्फ़ ढिटाई ही कहा जा सकता है। فَلَقَ के मायने फटने के हैं और ये माद्दा इस मफ़हूम के साथ क़ुरान में कसरत से आया है। जैसे {فَالِقُ الۡاِصۡبَاحِ ۚ} (अनआम:96) "चाक करने वाला सुबह की सफ़ेदी को।" और {قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ} (अल फ़लक़:1) "कहिये मैं पनाह माँगता

हूँ सुबह के रब की।" चुनाँचे इस आयत में भी लफ्ज़ فَلَقَ के लुग्वी मायने ही मुराद हैं, यानि समंदर फट गया और उसके दोनों हिस्से पहाड़ की तरह खड़े हो गए। कौन नहीं जानता कि मद्दो-जज़र की कैफ़ियत में ना तो समन्दर फटता है और ना ही उसका पानी चट्टान या पहाड़ की तरह खड़ा हो जाता है। चुनाँचे इस तावील के मुक़ाबले में आयत के अल्फ़ाज़ का लुग्वी ऐतबार से तजज़िया किया जाए तो क़ुरान के इस फ़रमान की हक्कानियत भी साबित हो जाती है: {لَّا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِۦ} (हा'मीम सज्दा:42) "कि बातिल इस किताब पर हमला नहीं कर सकता, ना सामने से और ना पीछे से।" यानि क़ुरान अपने मफ़ाहीम व मायनो की हिफ़ाज़त भी खुद करता है।

आयत 64

"और हम क़रीब ले आए वहीँ पर दूसरों को भी।"

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿64﴾

जब समन्दर फट गया तो हज़रत मूसा अलै. अपनी क़ौम को लेकर उस रास्ते से निकल गए। ऐन उस वक़्त उनके पीछे फ़िरऔन भी आ पहुँचा और उसने भी अपना लश्कर उसी रास्ते पर डाल दिया।

आयत 65

"और हमने निजात दे दी मूसा को और उनके साथ जो कोई भी था सबको।"

وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُۥٓ أَجْمَعِينَ ﴿65﴾

आयत 66

"फिर हमने गर्क़ कर दिया दूसरों को।"

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿66﴾

आयत 67

"यक़ीनन इसमें एक निशानी है, लेकिन इनकी अक्सरियत ईमान लाने वाली नहीं है।"

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿67﴾

इस आयत में हुज़ूर ﷺ और अहले ईमान को मुखातिब करके फ़रमाया जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! अगर मुशरिकीने मक्का को कोई निशानी चाहिये तो वह इस वाक़िये को देख लें। और अगर इन्हें इसमें कोई निशानी नज़र नहीं आती तो फिर कोई बड़े से बड़ा मौज़ज़ा भी इनकी आँखे नहीं खोल सकेगा। चुनाँचे आप ख्वाह कितनी ही कोशिश करें इनकी अक्सरियत ईमान नहीं लाएगी।

"और यक़ीनन आपका रब बहुत ज़बरदस्त, निहायत रहम करने वाला है।"

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿68﴾

अल्लाह तआला बहुत ताक़तवर और सब पर ग़ालिब है। वह जो चाहे हुक्म करे, मगर इसके साथ-साथ वह रहीम भी है और उसकी रहमत का तक़ाज़ा ये है कि मुशरिकीन को ऐसा कोई हिस्सी मौज़ज़ा ना दिखाया जाए जिससे इनकी मोहलत ख़त्म हो जाए।

आयात 69 से 104 तक

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۘ ـــ69 اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ـــ70 قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ـــ71 قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۙ ـــ72 اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ـــ73 قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ـــ74 قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۙ ـــ75 اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ـــ76ۖ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ ـــ77 الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۙ ـــ78 وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ۙ ـــ79 وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ـــ80ۚ وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۙ ـــ81 وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ؕ ـــ82 رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۙ ـــ83 وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۙ ـــ84 وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۙ ـــ85 وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ ـــ86 وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ۙ ـــ87 يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۙ ـــ88 اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ؕ ـــ89 وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ ـــ90 وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۙ ۝91 وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۙ ۝92 مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ؕ ـــ93 فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۙ ـــ94 وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ؕ ـــ95 قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۙ ـــ96 تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ ـــ97 اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ـــ98 وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ـــ99 فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ۙ ـــ١٠٠ وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ـــ١٠١ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ـــ102 اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ـــ١٠٣ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ـــ١٠٤

आयत 69

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ۘ ـــ69

"और इनको इब्राहीम की ख़बर पढ़ पर सुनाईये।"

आयत 70

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ـــ70

"जब उसने अपने वालिद और अपनी क़ौम से कहा कि तुम लोग ये किनको पूजते हो?"

आयत 71

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ـــ71

"उन्होंने जवाब दिया कि हम बुतों को पूजते हैं और इन ही के सामने ज्ञान-ध्यान में बैठे रहते हैं।"

आयत 72

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ۙ ـــ72

"उसने पूछा: क्या वह तुम्हारी बात सुनते हैं जब तुम उन्हें पुकारते हो?"

जब तुम उनसे दुआ करते हो और उनके सामने गिडगिडाते हो तो क्या वह तुम्हारी दुआएँ और तुम्हारी बातें सुनते हैं?

आयत 73

اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ـــ73

"या वह तुम्हें कोई नफ़ा या कोई नुक़सान पहुँचा सकते हैं?"

वह लोग हज़रत इब्राहीम अलै. के इन मन्तक़ी सवालात का इसके अलावा कोई जवाब ना दे सके:

आयत 74

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ــ74

"उन्होंने कहा: बल्कि हमने अपने आबा व अजदाद को ऐसा ही करते हुए पाया है।"

हमने अपने बाप-दादा को इनकी पूजा करते हुए पाया है, चुनाँचे हमने भी उनकी पैरवी में वही तरीक़ा इख़्तियार कर लिया है।

आयत 75

قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۙــ75

"इब्राहीम ने कहा: भला देखो तो! ये जिन्हें तुम लोग पूजते हो।"

आयत 76

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ــ76ۖ

"तुम और तुम्हारे पहले बाप-दादा।"

فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۙــ77

"ये सब मेरे तो दुश्मन हैं, सिवाय रब्बुल आलमीन के।"

हज़रात इब्राहीम अलै. ने गोया अलाल ऐलान कह दिया कि तुम्हारे और तुम्हारे आबा व अजदाद के इन मअबूदों से मेरी दुश्मनी है। मेरा मअबूद और मददगार सिर्फ़ वह अल्लाह है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है। मेरा तकिया और तवक्कुल बस उसी की ज़ात पर है।

आयत 78

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ۙــ78

"जिसने मुझे पैदा किया फिर वही मुझे हिदायत देता है।"

आयत 79

وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ۙــ79

"और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है।"

आयत 80

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۙ﴿80﴾

"और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है।"

यहाँ ये नुक्ता लायक़-ए-तवज्जो है कि हज़रत इब्राहीम अलै. ने बीमारी को अपनी तरफ़ मंसूब किया है और शिफ़ा को अल्लाह की तरफ़।

आयत 81

وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ۙ﴿81﴾

"और वही है जो मुझे मौत देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।"

आयत 82

وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ؕ﴿82﴾

"और वही है जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि वह रोज़े जज़ा मेरी खताओं से दरगुज़र फ़रमाएगा।"

अभी तक हज़रत इब्राहीम अलै. अपने वालिद और अपनी क़ौम के लोगों से मुखातिब थे। अब बराहेरास्त अल्लाह तआला से दुआ माँग रहे हैं:

आयत 83

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ۙ﴿83﴾

"ऐ मेरे परवरदिगार! तू मुझे हिकमत अता फ़रमा और मुझे अपने सालेह बन्दों में शामिल कर दे।"

आयत 84

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۙ﴿84﴾

"और मेरे लिये बना दे सच्ची नामवरी पिछले लोगों में।"

यानि बाद में आने वाली नस्लें मेरा ज़िक्र अच्छे अंदाज़ में करें और मेरा नाम इज्ज़त से लें।

आयत 85

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ۙ﴿85﴾

"और मुझे बना दे नेअमतों वाली जन्नत के वारिसों में से।"

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ﴿86﴾

"और मेरे वालिद को बख्श दे, यक़ीनन वह गुमराह लोगों में से है।"

आयत 87

"और मुझे रुसवा ना कीजियो उस दिन जब सब लोग उठाए जायेंगे।"

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ۙ﴿87﴾

आयत 88

"जिस दिन ना माल काम आएगा और ना बेटे।"

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ۙ﴿88﴾

जिस दिन अलाह की पकड़ से ना दौलत बचा सकेगी और ना औलाद।

आयत 89

"सिवाय उसके जो आए अल्लाह के पास क़ल्ब-ए-सलीम लेकर।"

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۭ﴿89﴾

सलीम के मायने है सलामती वाला: क़ल्बे सलीम या फ़ितरते सलीमा से ऐसा दिल, ऐसी फ़ितरत या ऐसी रूह मुराद है जो हर क़िस्म की आलूदगी से पाक यानि अपनी असली हालत पर हो। क़यामत के दिन जो शख्स ऐसे पाकीज़ा दिल के साथ अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर होगा उसे उस दिन की हौलनाकियों से बचा लिया जाएगा।

आयत 90

"और जन्नत क़रीब लाई जाएगी मुत्तक़ीन के लिये।"

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿90﴾

आयत 91

"और जहन्नम भी ज़ाहिर कर दी जाएगी बागियों के लिये।"

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ۙ﴿91﴾

आयत 92

"और उनसे कहा जाएगा कि कहाँ हैं वह जिन्हें तुम पूजा करते थे?"

وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿92﴾

आयत 93

"अल्लाह के सिवा। क्या अब वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं या (तुम्हारी तरफ़ से) कोई बदला ले सकते हैं?"

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ۭ﴿93﴾

आयत 94

"फिर औन्धे डाल दिए जायेंगे उस (जहन्नम) में वह और सब गुमराह लोग।"

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ۙ—94

"और इब्लीस के लश्कर भी सबके सब।"

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ؕ—95

आयत 96

"वह कहेंगे, जबकि वह उसमें एक-दूसरे के साथ झगड़ रहे होंगे:"

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ۙ—96

आयत 97

"अल्लाह की क़सम! यक़ीनन हम ही थे खुली गुमराही में।"

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ—97

आयत 98

"जब हम तुम्हें तमाम जहानों के परवरदिगार के बराबर ठहराते थे।"

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ —98

जहन्नम में तमाम गुमराह लोगों को, उनके मअबूदाने बातिल को और श्यातीने जिन्न को ऊपर-तले औंधे मुँह झोंक दिया जाएगा। यहाँ वह एक-दूसरे से झगड़ेंगे। गुमराह लोग अपने मअबूदों को मुखातिब करके अपनी गुमराही का ऐतराफ़ करेंगे। वह तस्लीम करेंगे कि उन्हें अल्लाह ही को रब्बुल आलमीन मानना चाहिये था जो सब इख्तियारात का मालिक है और वही मगफ़िरत भी कर सकता है। और ये कि उन्होंने अल्लाह के मुक़ाबले में झूठे मअबूद गढ़ लिये, उन्हें अल्लाह के बराबर ठहरा लिया और यूँ उन्होंने खुली गुमराही में पड़ कर खुद को बर्बाद कर लिया।

आयत 99

"और नहीं गुमराह किया हमें लेकिन इन मुजरिमों ने।"

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ —99

आयत 100

"तो अब यहाँ हमारे लिये कोई शफ़ाअत करने वाला नहीं है।"

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ۙ—١٠٠

आयत 101

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ١٠١

“और ना कोई मुख्लिस दोस्त।”

आयत 102

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ 102

“तो अगर हमें एक मर्तबा लौटना नसीब हो जाए तो हम मोमिन बन जायेंगे।”

आयत 103

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ١٠٣

“यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है। लेकिन इनकी अक्सरियत ईमान लाने वाली नहीं है।”

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ١٠٤

“और यक़ीनन आपका रब बहुत ज़बरदस्त, निहायत रहम करने वाला है।”

आयात 105 से 122 तक

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ١٠٥ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ١٠٦ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ١٠٧ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوْنِ ١٠٨ وَمَآ اَسْـَٔــلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٠٩ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ١١٠ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ
لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ١١١ قَالَ وَمَا عِلْمِىْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١١٢ اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰي رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ١١٣ وَمَآ اَنَا
بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ١١٤ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ١١٥ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ١١٦ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ
كَذَّبُوْنِ ١١٧ فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ١١٨ فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ١١٩
ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ١٢٠ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ١٢١ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ١٢٢

अब आगर अम्बिया अर्रुसुल का तज़किरा फिर उसी ज़मानी तरतीब से हो रहा है जिस तरतीब से पहले सूरतुल आराफ़ और सुरह हूद में हो चुका है। इस ज़िमन में हर रुकूअ के आखिर में दो आयात तरजीई कलिमात कर तौर पर बार-बार दोहराई जाएँगी।

आयत 105

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ١٠٥

“झूठलाया नूह की क़ौम ने भी रसूलों को।”

आयत 106

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ١٠٦

“याद करो जबकि उनसे उनके भाई नूह ने कहा कि क्या तुम तक़वा इख़्तियार नहीं करते?”

आयत 107

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ١٠٧

“यक़ीनन मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।”

मुझे अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ जो पैगाम देकर भेजा गया है वह मैं बिला कमो-कास्त तुम लोगों तक पहुँचा रहा हूँ।

आयत 108

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾

"पस तुम अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

वाज़ेह रहे कि रसूल की दावत के हमेशा दो हिस्से रहे हैं। इसका पहला हिस्सा है: فَاتَّقُوا اللّٰهَ या اعْبُدُوا اللّٰهَ यानि अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो या अल्लाह की बंदगी करो! और दूसरा हिस्सा है: وَاَطِيْعُوْنِ कि मेरा हुक्म मानो, मेरी इताअत करो! इसलिये कि रसूल की शख्सी इताअत लाज़िम होती है, जैसा कि सूरतुन्निसा में फ़रमाया गया: {وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ بِاِذْنِ اللّٰهِ} (आयत 64) "और हमने नहीं भेजा किसी रसूल को मगर इसलिये कि उसकी इताअत की जाए अल्लाह के हुक्म से।" इस सूरह मुबारका में ये नुक्ता हर रसूल के हवाले से बार-बार दोहराया गया है।

आयत 109

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ

"और मैं इस पर तुमसे किसी उजरत का तालिब नहीं हूँ।"

اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ۚ

"मेरी उजरत तो रब्बुल आलमीन ही के ज़िम्मे है।"

आयत 110

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾

"पस तुम अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो!"

आयत 111

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾

"उन्होंने कहा: क्या हम तुम्हारी बात मानें जबकि तुम्हारी पैरवी करने वाले घटिया लोग हैं!"

हज़रत नूह अलै. की क़ौम के सरदार और अशराफ़ आपकी दावते हक़ के जवाब में कहते थे कि हम आपको कैसे मान लें जबकि आपकी पैरवी इख़्तियार करने वाले तो हमारे कम्मी कमीन हैं, हमारे मआशरे के पसमांदह तबक़ात के लोग हैं जिन्हें हक़ीर और ज़लील समझा जाता है!

आयत 112

"नूह ने कहा: मुझे क्या इल्म है कि वह क्या काम करते हैं!"

قَالَ وَمَا عِلْمِىْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١١٢

यानि तुम्हारे अपने मैयारात हैं। तुम्हारे नज़दीक इज्ज़त का मैयार दौलत और वजाहत है, इसलिये एक ग़रीब मज़दूर को तुम लोग घटिया इंसान समझते हो, मगर मुझे इस ऐतबार से किसी के पेशे से कोई सरोकार नहीं। यही ऐतराज़ सरदाराने क़ुरैश को हुज़ूर ﷺ के साथियों के बारे में था। वह भी यही कहते थे कि आप पर ईमान लाने वालों में अक्सरियत मज़दूरों और गुलामों की है। जैसे हज़रत खब्बाब बिन अल अरत रज़ि. पेशे के ऐतबार से लुहार थे और सरदाराने क़ुरैश एक ग़रीब लुहार के साथ बैठना कैसे गवारा कर सकते थे! बहरहाल ना तो मज़दूरी करना या मेहनत से अपनी रोज़ी कमाना कोई शर्म की बात है और ना ही इस तरह के पेशे से कोई आदमी घटिया हो जाता है।

आयत 113

"इनका हिसाब तो मेरे रब के ज़िम्मे है, काश कि तुम लोगों को शऊर होता।"

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰي رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ١١٣

आयत 114

"और मैं इन मोमिनीन को धुत्कारने वाला नहीं हूँ।"

وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ١١٤

आयत 115

"मैं तो बस एक साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूँ।"

اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ١١٥

आयत 116

"उन्होंने कहा: ऐ नूह! अगर तुम बाज़ ना आए तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे।"

قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ١١٦

आयत 117

"उसने फ़रियाद की: ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया है।"

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ١١٧

आयत 118

فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا

"तो अब दो टूक फ़ैसला फ़रमा दे मेरे और इनके माबैन"

यानि ऐसा खुला फ़ैसला जिसके बाद हक़ के अहकाक़ और बातिल के अबताल में कोई शक या इब्हाम ना रह जाए।

وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ١١٨

"और निजात दे दे मुझे और जो मेरे साथ हैं अहले ईमान में से।"

आयत 119

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ١١٩

"तो हमने निजात दे दी उसको भी और उनको भी जो उसके साथ थे एक भरी कश्ती में।"

ये कश्ती पूरी तरह भरी हुई थी क्यों कि इसमें इंसानों (मोमिनीन) के अलावा हर क़िस्म के हैवानात के एक-एक जोड़े को भी सवार कर लिया गया था ताकि उनकी नस्ल को महफ़ूज़ रखा जा सके।

आयत 120

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ١٢٠

"फिर हमने इसके बाद बाक़ी सबको गर्क़ कर दिया।"

आयत 121

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ١٢١

"यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है। लेकिन इनकी अक्सरियत ईमान लाने वाली नहीं है।"

आयत 122

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ١٢٢

"और यक़ीनन आपका रब बहुत ज़बरदस्त, निहायत रहम वाला है।"

आयात 123 से 140 तक

كَذَّبَتْ عَادُۨالْمُرْسَلِيْنَ ١٢٣ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ١٢٤ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ١٢٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاَطِيْعُوْنِ ١٢٦ وَمَآ اَسْـَٔــلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٢٧ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ١٢٨ وَتَتَّخِذُوْنَ
مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ١٢٩ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ١٣٠ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ١٣١ وَاتَّـقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا
تَعْلَمُوْنَ ١٣٢ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ١٣٣ وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ١٣٤ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ١٣٥ قَالُوْا سَوَاۗءٌ
عَلَيْنَآ اَوَعَـظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ١٣٦ اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ١٣٧ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ١٣٨ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ١٣٩ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ١٤٠

आयत 123

كَذَّبَتْ عَادُ ٱلْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

"क़ौमे आद ने रसूलों को झूठलाया।"

आयत 124

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

"जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम डरते नहीं हो?"

आयत 125

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

"यक़ीनन मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।"

आयत 126

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾

"पस तुम अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

आयत 127

وَمَآ اَسْــَٔـلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾

"और मैं तुमसे इस पर किसी उजरत का तालिब नहीं हूँ, मेरी उजरत तो तमाम जहानों के रब ही के ज़िम्मे है।"

आयत 128

اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

"क्या तुम लोग तामीर करते हो हर ऊँची जगह पर एक यादगार, अबस काम करते हो।"

तुम लोग बगैर किसी मक़सद और अफ़ादियत (उपयोगिता) के जगह-जगह बड़ी-बड़ी इमारतें महज़ अपनी यादगारों के तौर पर तामीर कर देते हो। ये फज़ूल रीत हर तमद्दुन और हर क़ौम में रही है। हर दौर के उमरा और हुक्मरान ज़रे कसीर खर्च करके बड़ी-बड़ी इमारतें महज़ इसलिये तामीर करते रहें हैं कि वह दुनिया में उनकी यादगारों के तौर पर क़ायम रहें। अहरामे मिस्र और ताजमहल इन यादगारों की मिसालें हैं जिन पर अपने-अपने ज़माने में करोड़हा रूपया खर्च किया गया मगर इंसानियत के लिये इनकी अफ़ादियत कुछ भी नहीं है। क़ौमे आद के उमरा भी ऐसी यादगारें बनाने के शौक़ीन थे।

आयत 129

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾

"और तुम बनाते हो ऐसे शानदार महल कि शायद तुम्हें हमेशा (इनमें) रहना है।"

ऐसी यादगारें और ऐसे महलात तो बाद में भी क़ायम रहते हैं मगर इन्हें बनाने वाले बाक़ी नहीं रहते। जैसे गरनाता और क़ुरतबा के महलात तो अब भी मौजूद हैं मगर उनके मकीनों का आज कहीं नामो-निशान नहीं। बहरहाल इन महलात को तामीर करवाने वालों ने तो इन्हें ऐसे ही बनाया था जैसे उन्हें हमेशा इनमें रहना है।

आयत 130

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ۚ ١٣٠

"और जब तुम किसी की गिरफ़्त करते हो तो जालिमों की तरह गिरफ़्त करते हो।"

जब तुम किसी क़ौम पर हमलावर होते हो तो ज़ुल्म व जबर की इन्तहा कर देते हो।

आयत 131

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ ١٣١

"पस तुम अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

आयत 132

وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۚ ١٣٢

"उसका तक़वा इख़्तियार करो जिसने तुम्हें मदद पहुँचाई है उन चीज़ों के ज़रिये जिनको तुम जानते हो।"

अल्लाह तआला ने तुम्हें औलाद अता की है, माल व असबाब से नवाज़ा है, खुशहाली और फ़ारिगुल बाली दी है, वसीअ खित्ता-ए-ज़मीन बख्शा है और तुम्हारी इस ज़मीन को ख़ुसूसी तौर पर ज़रख़ेज़ बनाया है। और तुम लोग उस अल्लाह को ख़ूब पहचानते हो जिसकी तरफ़ से तुम्हें ये नेअमतें मिली हैं।

आयत 133

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ۙ ١٣٣

"इसने तुम्हें मदद पहुँचाई है चौपायों और बेटों के ज़रिये।"

आयत 134

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۚ ١٣٤

"और बाग़ात और चश्मों के ज़रिये।"

आयत 135

"मुझे तो अंदेशा है तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब का।"

إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ ١٣٥

आयत 136

"उन्होंने जवाब दिया कि (ऐ हूद) हमारे लिये बराबर है ख्वाह तुम वअज़ करो या ना करो।"

قَالُواْ سَوَآءٌ عَلَيۡنَآ أَوَعَظۡتَ أَمۡ لَمۡ تَكُن مِّنَ ٱلۡوَٰعِظِينَ ١٣٦

आपके इस वअज़ (उपदेश) का हम पर कुछ असर नही होगा, हम आपके कहने पर अपने अक़ाइद और अपने बाप-दादा के तरीक़ों को छोडने वाले नहीं हैं।

आयत 137

"ये कुछ नहीं मगर पहले लोगों की बातें।"

إِنۡ هَٰذَآ إِلَّا خُلُقُ ٱلۡأَوَّلِينَ ١٣٧

आप हमारे सामने पुराने ज़माने की बातों और फरसूदाह (घिसी-पिटी) रिवायात को दोहरा रहे हैं जिनका हक़ीक़त से कोई ताल्लुक़ नहीं है। ये बातें तो बस यूँ ही चली आई हैं।

आयत 138

"और हमें कोई अज़ाब नहीं दिया जाएगा।"

وَمَا نَحۡنُ بِمُعَذَّبِينَ ١٣٨

यह आप ख्वाह-म-ख्वाह हम पर धौंस जमा रहे हैं, हम पर कोई अज़ाब वगैरह आने वाला नहीं है।

आयत 139

"चुनाँचे उन्होंने उसको झुठला दिया, तो हमने उन्हें हलाक कर दिया।"

فَكَذَّبُوهُ فَأَهۡلَكۡنَٰهُمۡۗ

"यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है। लेकिन इनकी अक्सरियत ईमान लाने वाली नहीं है।"

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗۖ وَمَا كَانَ أَكۡثَرُهُم مُّؤۡمِنِينَ ١٣٩

आयत 140

"और (ऐ नबी ﷺ!) आपका रब ज़बरदस्त है, निहायत रहम फ़रमाने वाला।"

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلرَّحِيمُ ١٤٠

आयात 141 से 159 तक

كَذَّبَتۡ ثَمُودُ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ١٤١ إِذۡ قَالَ لَهُمۡ أَخُوهُمۡ صَٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ١٤٢ إِنِّي لَكُمۡ رَسُولٌ أَمِينٞ ١٤٣ فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ١٤٤ وَمَآ أَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ أَجۡرٍۖ إِنۡ أَجۡرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ١٤٥ أَتُتۡرَكُونَ فِي مَا هَٰهُنَآ ءَامِنِينَ ١٤٦ فِي

جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿١٤٧﴾ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۚ﴿١٤٨﴾ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ۚ﴿١٤٩﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ﴿١٥٠﴾
وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ۙ﴿١٥١﴾ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۚ﴿١٥٣﴾
مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۠ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۚ﴿١٥٥﴾ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ۙ﴿١٥٧﴾ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾

आयत 141

"(इसी तरह) क़ौमे समूद ने रसूलों को झुठलाया।"

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٤١﴾

आयत 142

"जब उनके भाई सालेह ने उन्हें कहा कि क्या तुम डरते नहीं हो?"

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ﴿١٤٢﴾

आयत 143

"यक़ीनन मैं तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।"

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۙ﴿١٤٣﴾

आयत 144

"पस अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।"

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۚ﴿١٤٤﴾

आयत 145

"और मैं तुमसे इस पर किसी उज्र का तालिब नहीं हूँ, मेरी उजरत तो तमाम जहानों के रब ही के ज़िम्मे है।"

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

आयत 146

"क्या तुम छोड़ दिये जाओगे इन (नेअमतों) में यहाँ अमन से!"

اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ۙ﴿١٤٦﴾

तुम्हारा क्या ख्याल है कि तुम इन सब चीज़ों के दरमियान जो यहाँ तुम्हें मयस्सर हैं, यूँ ही अमन व सुकून और इत्मिनान से हमेशा रहने दिये जाओगे और ये नेअमतें कभी तुमसे जुदा ना होगी?

आयत 147

"इन बाग़ात और चश्मों में।"

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿١٤٧﴾

आयत 148

"और खेतियों और नर्म व मुलायम खोशों वाली खजूरों में।"

وَزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۛ ١٤٨

आयत 149

"और तुम पहाड़ों को तराश कर अपने घर बनाते हो इतराते हुए!"

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ۛ ١٤٩

आयत 150

"पस तुम अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۛ ١٥٠

आयत 151

"और मत मानो हद से बढ़ने वालों का हुक्म।"

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ۛ ١٥١

आयत 152

"जो लोग ज़मीन में फ़साद मचाते हैं और इस्लाह नहीं करते।"

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ١٥٢

आयत 153

"उन्होंने जवाब दिया कि (ऐ सालेह) तुम नहीं हो मगर एक सहरज़दा शख्स।"

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۛ ١٥٣

यानि आप पर यक़ीनन जादू या आसेब के असरात हैं जो इस तरह की बातें कर रहे हैं।

आयत 154

"तुम नहीं हो मगर हमारे ही जैसे एक इंसान, तो ले आओ कोई निशानी अगर अगर तुम (अपने दावे में) सच्चे हो!"

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ١٥٤

आयत 155

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝١٥٥

"सालेह ने कहा: ये ऊँटनी है, एक दिन इसके पानी पीने की बारी है और एक मुअय्यन दिन की बारी तुम्हारी है।"

हज़रत सालेह अलै. ने फ़रमाया कि तुम्हारे मौज़ज़े के मुतालबे के जवाब में अल्लाह तआला ने ये ऊँटनी भेजी है, लेकिन अब तुम्हें मालूम होना चाहिये कि एक दिन ये अकेली पानी पियेगी और एक दिन तुम्हारे तमाम जानवर पियेंगे। इस ऊँटनी के बारे में रिवायत है कि वह अपनी बारी के दिन चश्मे का पूरा पानी पी जाती थी और उस दिन उनके जानवरों को पानी नहीं मिलता था। अगले दिन ऊँटनी नागा (skip) करती थी बाक़ी सब जानवर पानी पीते थे। मुझे "मदाइने सालेह" में वह चश्मा देखने की सआदत हासिल हुई है।

आयत 156

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٥٦

"और मत हाथ लगाना इसे बुरे इरादे से, वरना एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें आ पकड़ेगा।"

आयत 157

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ۝١٥٧

"तो उन्होंने उसकी कून्चें काट दीं, फिर वह होकर रह गए पछताने वाले।"

आयत 158

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ

"पस उनको आ पकड़ा अज़ाब ने।"

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٥٨

"यक़ीनन इसमें निशानी है, लेकिन इनकी अक्सरियत मानने वाली नहीं है।"

आयत 159

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٥٩

"और यक़ीनन आपका परवरदिगार बहुत ज़बरदस्त, निहायत रहम करने वाला है।"

आयात 160 से 175 तक

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٦٠ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝١٦١ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝١٦٢ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝١٦٣ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦٤ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦٥ وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ۝١٦٦ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ۝١٦٧ قَالَ اِنِّىْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ۝١٦٨ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٦٩ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝١٧٠ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝١٧١ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝١٧٢ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَاۗءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝١٧٣ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٧٤ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝١٧٥

आयत 160

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ الْمُرْسَلِيْنَ ١٦٠

"(इसी तरह) झुठलाया लूत की क़ौम ने भी मुरसलीन को।"

आयत 161

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ١٦١

"जब कहा उनसे उनके भाई लूत ने कि क्या तुम डरते नहीं हो?"

आयत 162

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ١٦٢

"मैं यक़ीनन तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।"

आयत 163

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ١٦٣

"पस तुम अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

आयत 164

وَمَآ اَسْـَٔـلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٦٤

"और मैं तुमसे इस पर किसी उजरत का तालिब नहीं हूँ, नहीं है मेरी उजरत मगर तमाम जहानों के रब के ज़िम्मे।"

आयत 165

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ١٦٥

"क्या तमाम जहानों में तुम ही (शहवत के लिये) मर्दों के पास जाते हो?"

दुनिया जहान में एक तुम ही ऐसे लोग हो जो शहवतरानी की गर्ज़ से मर्दों के पास जाते हो। वरना इंसानों में कोई दूसरी क़ौम ये हरकत नहीं करती, बल्कि ये काम तो जानवर भी नहीं करते।

आयत 166

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ

"और तुम छोड़ देते हो जिनको तुम्हारे लिये पैदा किया है तुम्हारे रब ने तुम्हारी बीवियों में से।"

अल्लाह तआला ने तुम्हारे जोड़ों के लिये औरतें पैदा की हैं। उन्हें छोड़ कर तुम अपनी शहवत का तक़ाज़ा मर्दों से पूरा करते हो।

"बल्कि तुम तो हद से बढ़ने वाले लोग हो।" بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾

आयत 167

"उन्होंने कहा कि ऐ लूत! अगर तुम बाज़ ना आए तो यहाँ से निकाल बाहर किये जाओगे।" قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿۱۶۷﴾

अगर आप अपनी इस वअज़ व नसीहत से और हम पर तनक़ीद करने से बाज़ ना आए तो हम आपको अपनी बस्ती से निकाल बाहर करेंगे।

आयत 168

"उसने कहा कि मैं तो तुम्हारे इन तौर-तरीक़ों से सख्त बेज़ार हूँ।" قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ﴿۱۶۸﴾

आयत 169

"परवरदिगार! तू निजात दे मुझे और मेरे घरवालों को इनके अमल से।" رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

आयत 170

"तो हमने निजात दी उसको भी और उसके सब घरवालों को भी।" فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۷۰﴾

आयत 171

"सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रहने वालों में से थी।" اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿۱۷۱﴾

यानि हज़रत लूत अलै. की बीवी जो आप पर ईमान नहीं लाई थी, पीछे रह जाने वालों में शामिल थी।

आयत 172

"फिर हमने उठा कर पटक दिया बाक़ियों को।" ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۱۷۲﴾

आयत 173

"और हमने बरसाई उन पर एक बारिश, तो बहुत ही बुरी थी वह बारिश जो उन लोगों وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۱۷۳﴾

पर बरसी जिन्हें ख़बरदार कर दिया गया था।"

आयत 174

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ـــ١٧٤

"यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, लेकिन इनकी अक्सरियत मानने वाली नहीं है।"

आयत 175

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ـــ١٧٥

"और यक़ीनन आपका रब बहुत ज़बरदस्त है, निहायत रहम करने वाला।"

आयत 176 से 191 तक

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔـيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ـــ١٧٦ش اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ـــ١٧٧ اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ـــ١٧٨ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ـــ١٧٩ وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ـــ١٨٠ اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ـــ١٨١ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ـــ١٨٢ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ـــ١٨٣ وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ـــ١٨٤ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ـــ١٨٥ وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ـــ١٨٦ فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ـــ١٨٧ قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ـــ١٨٨ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ـــ١٨٩ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ـــ١٩٠ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ـــ١٩١

आयत 176

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْـَٔـيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ـــ١٧٦ش

"(और इसी तरह) अस्हाबे अल ऐका नी भी झुठलाया रसूलों को।"

"ऐका" के मायने जंगल या वन के हैं। ये लफ्ज़ इससे पहले हज़रत शोएब अलै. की क़ौम के लिये सूरतुल हिज्र की आयत 78 में भी आ चुका है।

आयत 177

اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ـــ١٧٧

"जब कहा उनसे शोएब ने कि क्या तुम डरते नहीं हो?"

आयत 178

اِنِّىْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ـــ١٧٨

"मैं यक़ीनन तुम्हारे लिये एक अमानतदार रसूल हूँ।"

आयत 179

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ـــ١٧٩

"पस तुम अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो और मेरी इताअत करो।"

आयत 180

“और मैं तुमसे इस पर किसी उजरत का तालिब नहीं हूँ, नहीं है मेरी उजरत मगर तमाम जहानों के रब के ज़िम्मे।”

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ١٨٠

आयत 181

“पैमानों को पूरा भरा करो और ख़सारा पहुँचाने वालों में से मत हो जाओ।”

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ١٨١

आयत 182

“और वज़न किया करो सीधी तराज़ू के साथ।”

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ١٨٢

आयत 183

“और मत घटा कर दिया करो लोगों को उनकी चीज़ें और मत फिरो ज़मीन में फ़साद मचाते हुए।”

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ١٨٣

आयत 184

“और डरो उससे जिसने तुम्हें पैदा किया और पहली मख्लूक़ को भी।”

وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ١٨٤

आयत 185

“उन्होंने कहा कि तुम तो बस सहरज़दा लोगों में से हो।”

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ١٨٥

हम तुम्हारे बारे में यही गुमान करते हैं कि तुम महज़ एक सहरज़दा शख्स हो। तुम पर किसी ने जादू कर दिया है जिसके ज़ेरे असर हमें नसीहतें करते रहते हो।

आयत 186

“और तुम नहीं हो मगर हमारे ही जैसे एक इंसान, और तुम्हारे बारे में हमारा गुमाने ग़ालिब है कि तुम झूठों में से हो।”

وَمَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَاِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ١٨٦

आयत 187

فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۷﴾

"तो गिरा दो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा अगर तुम सच्चे हो।"

आयत 188

قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

"उसने जवाब दिया कि मेरा रब ख़ूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो।"

मेरी दावत पर तुम्हारे एक-एक रद्दे अमल समेत तुम्हारे तर्ज़े अमल और तुम्हारे तमाम करतूतों से मेरा परवरदिगार ख़ूब वाक़िफ़ है।

आयत 189

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۭ

"तो उन्होंने उसको झुठला दिया, तो उन्हें आ पकड़ा सायबान वाले दिन के अज़ाब ने।"

यूँ लगता है इस क़ौम पर पहले ऊपर से कोई अज़ाब आया था और इन पर सायबान की तरह छा गया था।

اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۸۹﴾

"यक़ीनन वह एक बड़े दिन का अज़ाब था।"

आयत 190

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

"यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, लेकिन इनकी अक्सरियत मानने वाली नहीं है।"

आयत 191

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۹۱﴾

"और (ऐ नबी ﷺ!) आपका रब बहुत ज़बरदस्त, निहायत रहम करने वाला है।"

चुनाँचे अल्लाह तआला की रहमत का तक़ाज़ा है कि मुशरिकीने मक्का को अभी मज़ीद मोहलत दी जाए। इसलिये हिस्सी मौज़ज़े के बारे में इनका मुतालबा अभी पूरा नहीं किया जा रहा।

यहाँ अम्बिया अर्रुसुल का बयान ख़त्म हुआ। इसके बाद एक तवील रुकूअ आ रहा है जिसमें रसूल अल्लाह ﷺ से ख़िताब है।

आयात 192 से 227 तक

وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۲﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰي قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾ وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾ اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ﴿۱۹۷﴾ وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰي بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿۱۹۸﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۰۰﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿۲۰۱﴾ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۰۲﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ﴿۲۰۳﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿۲۰۵﴾ ثُمَّ جَاۗءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿۲۰۶﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿۲۰۷﴾ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿۲۰۸﴾ ذِكْرٰي ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿۲۰۹﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۱۰﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۲۱۱﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿۲۱۲﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿۲۱۳﴾ وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿۲۱۴﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَي الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿۲۱۷﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿۲۱۹﴾ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۲۰﴾ هَلْ

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلٰي مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ۲۲۱ تَنَزَّلُ عَلٰي كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۲۲۲ يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۲۲۳ وَالشُّعَرَاۗءُ يَتَّبِعُهُمُ
الْغَاوٗنَ ۲۲٤ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ۲۲۵ وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۲۲٦ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا
اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ۭ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۲۲۷

आयत 192

وَاِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۱۹۲

"और यक़ीनन ये (क़ुरान) तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल करदा है।"

आयत 193

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۱۹۳

"उतरे हैं इसे लेकर रूहुल अमीन।"

"الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ" (अमानतदार रूह) से मुराद जिबरीले अमीन अलै. हैं।

आयत 194

عَلٰي قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۱۹٤

"आपके दिल पर ताकि आप हो जाएँ ख़बरदार करने वालों में से।"

मैंने क़ब्ल अज़ भी बारहा ये ज़िक्र किया है कि हुज़ूर ﷺ की ज़ात में असल महबत वही आपका क़ल्बे मुबारक था और क़ल्बे मुबारक के अंदर आप ﷺ की रूह वही को क़ुबूल (receive) करती थी। इंसानी इल्म के हवाले से ये बात भी गुज़िश्ता सतूर में कई दफ़ा दोहराई जा चुकी है कि बुनियादी तौर पर इंसानी इल्म की दो अक़साम हैं। एक इल्म तो वह है जो इंसान को उसके हवासे खम्सा के ज़रिये हासिल होता है। ये इक्तसाबी इल्म (Acquired Knowledge) है जिसके लिये हर इंसान कोशिश और मेहनत करता है। इस इल्म के हसूल का तरीक़ा ये है कि इंसान हवासे खम्सा से मालूमात हासिल करके इन्हें process करने के लिये दिमाग़ या अक़्ल (क़ुरान में इंसान की इस सलाहियत के लिये "फ़वाद" का लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है) के हवाले करता है। शख्सी और इज्तमाई सतह पर ये इल्म मुसलसल इरतक़ाअ पज़ीर (progressive) है। दूसरा इल्म वह है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से बराहेरास्त इंसानी क़ल्ब या रूह पर नाज़िल होता है। इस Revealed Knowledge की सबसे महफ़ूज़ और मुसद्दक़ा सूरत वही की है जो फ़रिश्ते के ज़रिये सिर्फ़ अम्बिया किराम अलै. पर नाज़िल होती थी और इसे श्यातीन की दखलअंदाजी से मुकम्मल तौर पर महफ़ूज़ रखा जाता था। अलबत्ता वही का दरवाज़ा मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के बाद हमेशा के लिये बंद हो चुका है। इस क़िस्म के बराहेरास्त इल्म (वहबी इल्म) की जो सूरतें आम इंसानों के लिये मुमकिन हो सकती हैं उनमें इल्हाम, अल्क़ाअ, कशफ़, रुअया-ए-सादिक़ा (सच्चे ख़्वाब) वगैरह शामिल हैं। लेकिन इनमें से किसी ज़रिये से हासिल होने वाला इल्म दीन और शरियत में हुज्जत नहीं बन सकता। दीन और शरियत में हुज्जत सिर्फ़ क़ुरान और सुन्नत ही हैं। अलबत्ता किसी के ज़ाती कशफ़ के ज़रिये हासिल होने वाली मालूमात या हिदायात अगर शरियत के ख़िलाफ़ ना हों तो खुद उस शख्स के लिये हुज्जत बन सकती हैं, किसी दूसरे के लिये नहीं।

आयत 195

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾

"(ये नाज़िल हुआ है) वाज़ेह अरबी ज़बान में।"

आयत 196

وَاِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾

"और यक़ीनन ये पहलों के सहीफों में भी मौजूद है।"

इसका ये मतलब भी है कि इसका ज़िक्र और इसके बारे में पेशनगोईयाँ साबक़ा आसमानी कुतुब में पाई जाती हैं और ये भी कि इसके बुनियादी मज़ामीन पहली कुतुब और सहीफों में भी मौजूद हैं। इन सहीफ़ों और तौरात व इंजील की बुनियादी तालीमात वही थीं जो क़ुरान की तालीमात हैं। अगर कोई फ़र्क़ या इख्तलाफ़ था तो सिर्फ़ मुख्तलिफ़ शरियतों के जुज़याती अहकाम में था। इस लिहाज़ से क़ुरान इन तमाम सहाइफ़ व कुतुब का मुतम्मिम यानि तकमीली एडिशन है।

आयत 197

اَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۹۷﴾

"क्या इनके लिये ये निशानी काफ़ी नहीं है कि इसको जानते हैं उल्मा-ए-बनी इसराईल।"

उल्मा-ए-बनी इसराईल बखूबी जानते थे कि क़ुरान और मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की बेअसत अल्लाह की तरफ़ से है।

आयत 198

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰي بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿۱۹۸﴾

"और अगर हमने इस (क़ुरान) को नाज़िल कर दिया होता किसी अज्मी पर।"

आयत 199

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

"और वह इसे इनको पढ़ कर सुनाता तब भी वह इस पर ईमान लाने वाले नहीं थे।"

हम ये भी कर सकते थे कि क़ुरान किसी ऐसे शख्स पर नाज़िल कर देते जिसकी मादरी ज़बान अरबी ना होती, फिर अगर ऐसा शख्स इन्हें अरबी क़ुरान पढ़ कर सुनाता तो ये गोया एक खुला मौज़ज़ा होता, लेकिन ये लोग फिर भी इसे मानने वाले नहीं थे।

आयत 200

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۰۰﴾

"इसी तरह हमने दाख़िल कर दिया है इस (इन्कार) को मुजरिमों के दिलों में।"

क़ुरान का इन्कार इन लोगों के दिलों में अब डेरे जमा चुका है। अब इन्हें लाख मौज़ज़े दिखा दिये जाएँ ये मानने वाले नहीं हैं।

आयत 201

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٢٠١

"ये ईमान नहीं लायेंगे इस पर जब तक कि देख ना लें दर्दनाक अज़ाब को।"

आयत 202

فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٠٢

"तो वह इन पर अचानक आ जाएगा और इन्हें गुमान भी नहीं होगा।"

आयत 203

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝٢٠٣

"(उस वक़्त) ये कहेंगे कि क्या हमें मोहलत मिल सकती है?"

उस वक़्त ये दुहाई देंगे कि किसी तरीक़े से वह अज़ाब टल जाए और इन्हें थोड़ी सी मोहलत दे दी जाए।

आयत 204

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٢٠٤

"तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब के लिये जल्दी मचा रहे हैं?"

इस वक़्त तो ये लोग आपसे बार-बार मुतालबा कर रहे हैं कि आप ले आयें हम पर वह अज़ाब जिससे हमें आप ﷺ डराते हैं। हम तो आपकी रोज़-रोज़ की तंबीहात से तंग आ गए हैं।

आयत 205

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝٢٠٥

"तो क्या आपने देखा, अगर हम इन्हें चंद साल और भी फ़ायदा उठाने दें!"

आयत 206

ثُمَّ جَاۗءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٢٠٦

"फिर इन पर वह अज़ाब आ जाए जिसका इनसे वादा किया जा रहा है।"

आयत 207

مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝٢٠٧

"तो कुछ काम नहीं आएगा इनके वह सब कुछ जिससे वह फ़ायदा पहुँचाये जाते थे।"

दुनिया का माल व मता जिससे वह फ़ायदा उठाते रहे हैं वह उन्हें उस अज़ाब से बचा नहीं सकेगा।

आयत 208

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ۝٢٠٨

"और हमने कभी किसी बस्ती को हलाक नहीं किया मगर उसके लिये ख़बरदार करने वाले थे।"

आयत 209

ذِكْرٰي ڕ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٢٠٩

"याद दिहानी के लिये, और हम ज़ालिम नहीं हैं।"

गोया इस सिलसिले में ये अल्लाह का अटल क़ानून है जिसका ज़िक्र सूरह बनी इसराईल में इस तरह आया है: { وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا } (आयत 15) "और हम अज़ाब देने वाले नहीं हैं जब तक कि रसूल ना भेज दें।" यानि किसी क़ौम पर उस वक़्त तक अज़ाबे इस्तेसाल नहीं आया जब तक उन्हें ख़बरदार करने के लिये कोई रसूल मबऊस नहीं कर दिया गया। लेकिन रसूल के इत्मामे हुज्जत करने के बाद भी अगर मुतालक़ा क़ौम ईमान ना लाई तो फिर ऐसा अज़ाब आया कि सफ़ह-ए-हस्ती से उसका नामो-निशान मिटा दिया गया: { فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا } (अनआम 45) "फिर ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई।"

आयत 210

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ۝٢١٠

"और इस (क़ुरान) को लेकर श्यातीन नाज़िल नहीं हुए।"

अरबों के यहाँ आम लोग शायरों के बारे में ये ख्याल रखते थे कि इनके क़ाबू में जिन्न होते हैं जो इनको नई-नई और अच्छी-अच्छी बातें अशआर की शक्ल में जोड़-जोड़ कर देते रहते हैं। चुनाँचे जब क़ुरान नाज़िल होना शुरू हुआ तो बाज़ मुशरिकीन ने इसके बारे में भी कहना शुरू कर दिया कि इसे श्यातीने जिन्न नाज़िल कर रहे हैं।

आयत 211

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝٢١١

"और ना तो ऐसा करना उनके लायक़ है और ना ही वह इसकी इस्तताअत रखते हैं।"

आयत 212

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ۝٢١٢

"वह तो (वही-ए-इलाही के) सुनने से भी माज़ूल किये जा चुके हैं।"

ये बहुत अहम मज़मून है जो यहाँ पहली दफ़ा आया है, लेकिन आइन्दा सूरतों में मुतअद्दिद मक़ामात पर इसका ज़िक्र आएगा। इस मौज़ू पर क़ुरान से

हमें जो मालूमात मिलती हैं उनका खुलासा ये है कि फ़रिश्ते नूरी मख्लूक़ हैं और जिन्न आग से बनाए गए हैं: {وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ} (रहमान 15) "और पैदा किया उसने जिन्नात को आग की लपट से।" चूँकि फ़रिश्तों की तरह जिन्नात का मदद-ए-तख्लीक़ भी बहुत लतीफ़ है इस वजह से उनके लिये फ़रिश्तों का क़ुर्ब हासिल कर लेना और इनसे कुछ मालूमात हासिल कर लेना मुमकिन है। चुनाँचे आम तौर पर श्यातीने जिन्न किसी ना किस हद तक फ़रिश्तों से आलमे बाला की ख़बरें मालूम करने में कामयाब हो जाते थे, लेकिन जब भी किसी रसूल की बेअसत होती तो आलमे बाला में ख़ुसूसी पहरे बैठा दिए जाते ताकि फ़रिश्तों के ज़रिये वही की तरसील को महफ़ूज़ बनाया जा सके। इसी असूल के तहत मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ की बेअसत के बाद आलमे बाला की ख़ास हुदूद से आगे जिन्नों का दाखिला मुस्तक़िल तौर पर बंद कर दिया गया और वहाँ से वह किसी क़िस्म की सुन गुण लेने के अहल नहीं रहे। यही वह कैफ़ियत और सूरतेहाल है जिसका ज़िक्र आयत ज़ेरे मुताअला में किया गया है वह तो अब सुनने से भी माज़ूल कर दिये गए हैं और आलमे बाला से उनका सुन गुण लेने का भी कोई इम्कान नहीं रहा। सूरतुल जिन्न में ये मज़मून क़द्रे ज़्यादा वज़ाहत से आएगा।

आयत 213

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ۚ﴿٢١٣﴾

"तो मत पुकारना अल्लाह के साथ किसी और मअबूद को, वरना तुम अज़ाब पाने वालों में से होकर रहोगे।"

आयत 214

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۙ﴿٢١٤﴾

"और ख़बरदार कीजिये अपने क़रीबी रिश्तेदारों को।"

इस आयत के बारे में तारीख़ से साबित है कि ये तक़रीबन 3 नबवी में नाज़िल हुई थी। चुनाँचे इस तारीख़ी सबूत से इस दावे की तस्दीक़ होती है कि सूरतुल शुअरा बिल्कुल इब्तदाई ज़माने की सूरत है। ये सूरत अपनी छोटी-छोटी आयात और तेज़ आहंग के साथ शुरू से आख़िर तक एक मरबूत और मुसलसल खुत्बे की सूरत में है और ये आयत भी अपने अंदाज़ के ऐतबार से मा-क़ब्ल और मा-बाद की आयात से मुख्तलिफ़ नहीं। यानि ऐसा कोई इम्कान नज़र नहीं आता कि ये आयत तो पहले नाज़िल हुई हो मगर बाद में नाज़िल होने वाली सूरत में शामिल कर दी गई हो। बहरहाल सूरतुल शुअरा नाज़िल तो इब्तदाई दौर में हुई थी मगर हिकमते खुदावन्दी के तहत इसे इब्तदाई ज़माने की सूरतों (क़ुरान की आख़री मंज़िल) में शामिल किये जाने के बजाए इसकी मौजूदा जगह पर रखा गया है। बिल्कुल उसी तरह जैसे सूरतुल हिज्र को पिछले ग्रुप की सूरतों में शामिल किया गया है, हालाँकि वह भी बिल्कुल इब्तदाई ज़माने में नाज़िल हुई थी।

रिवायात में आता है कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद रसूल अल्लाह ﷺ ने हज़रत अली रज़ि. को एक दावत का अहतमाम करने के लिये फ़रमाया। हज़रत अली रज़ि. आप ﷺ ही के ज़ेरे किफ़ालत थे और आपके साथ ही रहते थे। चुनाँचे आप ﷺ ने तमाम बनु हाशिम को खाने पर मदऊ किया। खाने के बाद आप उन्हें दावत देने के लिये खड़े हुए तो उन्होंने शोर व गुल मचाना

शुरू कर दिया और आपकी बात सुने बगैर चले गए। कुछ रोज़ बाद आप ﷺ ने दोबारा उन्हें मदऊ फ़रमाया। इस दफ़ा खाने के बाद चार व नाचार वह बैठे रहे और आपने उनके सामने एक दावती खुत्बा दिया। ये खुत्बा मुख़्तसर है मगर आप ﷺ के अज़ीम खुत्बात में से है। हैरत की बात ये है कि हमारे यहाँ अहादीस की कुतुब में ये खुत्बा (अपने इल्म के हद तक मुझे वसूक़ है) मौजूद नहीं है, अलबत्ता अहले तशय्यो की मशहूर किताब "नहजुल बलागा" में यह खुत्बा शामिल है। "नहजुल बलागा" बुनियादी तौर पर हज़रत अली रज़ि. के खुत्बात और खतूत पर मुश्तमिल है, लेकिन इसका एक हिस्सा हुज़ूर ﷺ के खुत्बात के लिये मुख्तस किया गया है। अगरचे "नहजुल बलागा" में खुत्बे के मतन के साथ किसी क़िस्म की सराहात मौजूद नहीं कि ये खुत्बा किस मौक़े पर इरशाद फ़रमाया गया मगर खुत्बे के मतन और अस्लूब की बिना पर मुझे यक़ीन है कि ये वही खुत्बा है जो आप ﷺ ने बनु हाशिम की मज़कूरह ज़ियाफ़त के मौक़े पर इरशाद फ़रमाया था। मेरे किताबचे "दावत इल्लल्लाह" और इस किताबचे के इंग्लिश तर्जुमे "Calling People unto Allah" में इस खुत्बे का पूरा मतन मौजूद है। बहरहाल "दावते हक़" के हवाले से ये बहुत अहम खुत्बा है।

आयत 215

"और अपने बाज़ू झुका कर रखें उनके लिये जो आपके पैरोकार हैं मोमिनीन में से।"

وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۲۱۵

हुज़ूर ﷺ से फ़रमाया जा रहा है कि आप मोमिनीन के साथ तवाज़ेअ से साथ पेश आयें और हमेशा उनकी दिलजोई फरमायें। जैसा कि क़ब्ल अज़ भी ज़िक्र हो चुका है, सूरतुल शु'अरा और सूरतुल हिज्र का ज़माना-ए-नुज़ूल एक ही है और इसी लिहाज़ से इन दोनों सूरतों में गहरी मुशाबेहत भी पाई जाती है। चुनाँचे इस आयत से मिलते-जुलते अल्फ़ाज़ सूरतुल हिज्र के आख़िर में भी आए हैं: {وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ} (आयत 88) "और अहले ईमान के लिये अपने बाज़ू झुका कर रखें।"

आयत 216

"फिर अगर ये लोग आपकी नाफ़रमानी करें तो इनसे कह दीजिये कि मैं बरी हूँ उससे जो कुछ तुम कर रहे हो।"

فَاِنۡ عَصَوۡكَ فَقُلۡ اِنِّىۡ بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ۲۱۶

सूरतुल काफ़िरून (आयात 1 से 3) में भी इसी तरह दो टूक अंदाज़ में हुक्म दिया गया है: {قُلۡ يٰٓاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ} {لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ} {وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ} "आप कह दीजिये कि ऐ काफ़िरो! मैं इबादत नहीं करता उसकी जिसकी तुम लोग इबादत करते हो। और ना तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।" और फिर आख़िर में बहुत वाज़ेह तौर पर ऐलाने बराअत कर दिया गया: {لَـكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ} (आयत 6) "तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन है और मेरे लिये मेरा दीन।"

आयत 217

"और (ऐ नबी ﷺ!) आप भरोसा कीजिये उस अल्लाह पर जो बहुत ज़बरदस्त, निहायत रहम वाला है।"

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢١٧﴾

आयत 218

"जो देखता है आपको जब आप खड़े होते हैं।"

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٢١٨﴾

इससे आप ﷺ का तहज्जुद के लिये खड़े होना मुराद है। वाज़ेह रहे कि तहज्जुद का हुक्म आप ﷺ को बिल्कुल इब्तदाई दौर में ही दे दिया गया था: {يَا أَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ} {قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا} (मुज़म्मिल 1-2) "ऐ चादर में लिपटने वाले! क़याम कीजिये रात में मगर थोड़ा।" तो गोया यहाँ इसी हवाले से फ़रमाय जा रहा है कि ऐ नबी ﷺ! जब आप तहज्जुद के लिये हमारे हुज़ूर खड़े होते हैं तो उस वक़्त हम आपको देख रहे होते हैं। हम बेशक आपकी नज़रों से पोशीदा हैं मगर आप हमारी नज़रों से पोशीदा नहीं हैं: (सूरतुल अनआम 103) {لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ} "उसे निगाहें नहीं पा सकती जबकि वह तुम्हारी निगाहों को पा लेता है, और वह लतीफ़ भी है और हर चीज़ से बाखबर भी।"

आयत 219

"और (वह देखता है) आपके आने-जाने को सज्दा करने वालों में।"

وَتَقَلُّبَكَ فِي السَّاجِدِينَ ﴿٢١٩﴾

हुज़ूर ﷺ का मामूल था कि आप तहज्जुद की नमाज़ पढने वाले मुसलमानों के घरों के पास से रात को गुज़रते और उनको देखते थे। आप ﷺ के इसी मामूल का यहाँ ज़िक्र फ़रमाया गया है।

आयत 220

"यक़ीनन वह सब कुछ सुनने वाला, और सब कुछ जानने वाला है।"

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٢٠﴾

आयत 221

"क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शयातीन किन पर उतरा करते हैं?"

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٢١﴾

ऐ वह लोगों! जो समझते हो कि ये क़ुरान जिन्नात और ख़बीस रूहों का बनाया हुआ है, आओ! मैं तुम्हें बताऊँ कि ये शयातीन जो हैं वह किन लोगों पर उतरा करते हैं?

आयत 222

تَنَزَّلُ عَلٰي كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۙ ٢٢٢

“वह तो उतरते हैं हर झूठ गढ़ने वाले गुनाहगार पर।”

ये तो गोया “कंद हम जिंस बाहम जिंस परवाज़” वाला मामला है। यानि गंदे और ख़बीस किरदार, दोस्ती और क़ुर्ब के लिये अपने जैसे किरदारों ही को ढूँढते हैं। चुनाँचे श्यातीन भी अपने इल्तफ़ात के लिये इंसानों में से उन्हीं लोगों के साथ राब्ता रखेंगे जो गुनाह और बदकिरदारी में अपनी मिसाल आप हों।

आयत 223

يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ۭ ٢٢٣

“वह अलक़ा करते हैं सुनी-सुनाई बातें, और उनमें से अक्सर झूठे होते हैं।”

आयत 224

وَالشُّعَرَاۗءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ۭ ٢٢٤

“और शौअरा की पैरवी तो गुमराह लोग करते हैं।”

मुशरिकीने मक्का में से कुछ लोगों का ख्याल था कि मोहम्मद (ﷺ) ने शायरी सीख ली है और ये कि क़ुरान दरअसल इनका शायराना कलाम है। इस हवाले से यहाँ दरअसल ये बताना मक़सूद है कि शायरों के किरदार को तुम लोग अच्छी तरह जानते हो। तुम खुद सोचो कि ऐसे किरदार को हमारे रसूल (ﷺ) के किरदार से क्या निस्बत?

इस आयत में शु'अरा के पैरोकारों के बारे में जो बुनियादी असूल बताया गया है इसमें मुझे कोई इस्तशना (exception) नज़र नहीं आता। अगरचे अल्लामा इक़बाल का मामला बहुत से ऐतबारात से मुख्तलिफ़ है मगर उनके पैरोकारों पर भी क़ुरान का ये क़ानून सौ फ़ीसद मुन्तबिक़ होता है। इस हक़ीक़त को इस पहलु से देखना चाहिये कि अल्लामा इक़बाल के हाशिया नशीनों में से कोई एक शख्स भी ऐसा सामने नहीं आ सका जिसने उनकी नज़रियात की रौशनी से अपनी अमली ज़िंदगी का कोई गोशा रौशन किया हो और अपनी शख्सियत में बंदा-ए-मोमिन के इस किरदार की कोई रमक़ पैदा करने की कोशिश की हो जिसका नक्शा अल्लामा इक़बाल ने अपने कलाम में पेश किया है। बल्कि अल्लामा इक़बाल तो खुद अपने बारे में भी ऐतराफ़ करते हैं कि महज़ गुफ्तार के गाज़ी थे:

इक़बाल बड़ा उपदेशक है मन बातों में मोह लेता है
गुफ्तार का ये गाज़ी तो बना, किरदार का गाज़ी बन ना सका!

इस हवाले से सूरह यासीन की आयत 69 में हुज़ूर ﷺ के बारे में बहुत वाज़ेह तौर पर फ़रमाया दिया गया है: { وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ۭ } “हमने आपको शेर कहना सिखाया ही नहीं और ये आपकी शायाने शान ही नहीं।”

आयत 225

"क्या तुम देखते नहीं हो कि वह हर वादी में सरगर्दा रहते हैं।"

اَلَمۡ تَرَ اَنَّهُمۡ فِیۡ کُلِّ وَادٍ یَّهِیۡمُوۡنَ ۙ﴿۲۲۵﴾

ग़ज़ल के एक शेर में शायर लोग मशरिक़ की बात करते हैं तो दूसरे में मगरिब की। एक मिसरे में आसमान की सैर का ज़िक्र करते हैं तो दूसरे में ज़मीन पर आकर सहरा नूरदी करते नज़र आते हैं।

आयत 226

"और ये कि वह जो कहते हैं वह करते नहीं।"

وَاَنَّهُمۡ یَقُوۡلُوۡنَ مَا لَا یَفۡعَلُوۡنَ ۙ﴿۲۲۶﴾

शु'अरा के बारे में सबसे बड़ी बात यहाँ ये बताई गई कि इनके क़ौल व फ़ेअल में तज़ाद होता है और ये आदत बहुत घटिया किरदार की मज़हर है।

आयत 227

"सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और नेक आमाल करें और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करें"

اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَکَرُوا اللّٰهَ کَثِیۡرًا

ये अलबत्ता इस्तशनाई हुक्म है। कोई शायर अगर हक़ीक़ी मोमिन हो और अमल-ए-सालेह पर कारबंद होने के साथ-साथ कसरते ज़िक्रुल्लाह पर भी मदावमत करे तो वह यक़ीनन मज़कूरह बाला मज़मत से मुस्तशना होगा और उसका कलाम भी खैर और भलाई का बाइस बनेगा। इस सिलसिले में हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. की मिसाल दी जा सकती है जो दरबारे नबवी के शायर थे। अरब में उस वक़्त शायरी का बहुत रिवाज़ था और मुशरिकीन के शु'अरा-ए-हुजूया अशआर के ज़रिये हुज़ूर ﷺ की शान में गुस्ताखी करते थे। चुनाँचे इस मैदान में उनके जवाब की ज़रूरत महसूस हुई तो ये फ़रीज़ा हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. ने अंजाम दिया। इस लिहाज़ से आप सबसे पहले नात गो शायर भी हैं। अलबत्ता शु'अरा के बारे में क़ुरान का ये तब्सिरा इस क़दर जामेअ और मब्नी बर-हक़ीक़त है कि इस्तशनाई सूरतों में भी कहीं ना कहीं, कोई ना कोई कसर रह ही जाती है। चुनाँचे हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. को अगरचे दरबारे नबवी का शायर होने का ऐज़ाज़ हासिल है और बतौर सहाबी भी इनका दर्जा बहुत बुलंद है मगर ये हक़ीक़त है कि आप मर्दे मैदान नहीं थे। गज़वा-ए-अहज़ाब के मौक़े पर हुज़ूर ﷺ ने इनको उस मकान पर बतौर पहरेदार मुतअय्यन फ़रमाया था जहाँ पर मुसलमान ख्वातीन को रखा गया था। हुज़ूर ﷺ की फूफी हज़रत सफिया रज़ि. ने एक यहूदी को मशकूक अंदाज़ में उस मकान के आस-पास फिरते देखा तो उन्होंने हज़रत हस्सान रज़ि. से कहा कि आप जाकर इस शख्स को क़त्ल कर दें। ये सुन कर हज़रत हस्सान रज़ि. ने साफ़ मअज़रत कर दी कि मैं ये काम नहीं कर सकता। इस पर हज़रत सफिया रज़ि. एक लकड़ी हाथ में लेकर गईं और उस लकड़ी से यहूदी के सर पर ऐसी ज़र्ब लगाई कि उसका काम तमाम कर दिया। वापस आकर उन्होंने हज़रत हस्सान

रज़ि. से कहा कि अब आप जाकर उस यहूदी के हथियार वगैरह उतार कर ले आएँ। इस पर उन्होंने जवाब दिया कि मुझे इनकी ज़रूरत नहीं है।

"और वह बदला लें इसके बाद कि उन पर ज़ुल्म किया गया हो।" وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ

ये उन मुश्तशना क़िस्म के शायरों की चौथी सिफ्त बयान की गई कि वह ज़रूरत पेश आने पर ज़ालिमों के मुक़ाबले में हक़ की हिमायत के लिये अपनी ज़बान से वही काम लें जो एक मुजाहिद तीर व शमशीर से लेता है।

जैसे हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि. कुफ्फ़ार की तरफ़ से हुज़ूर ﷺ के ख़िलाफ़ कहे गए हज्विया अशआर का जवाब दिया करते थे और हुज़ूर ﷺ की तरफ़ से मदाफ़त करते थे। हुज़ूर ﷺ ने इनके बारे में फ़रमाया था कि हस्सान के अशआर कुफ्फ़ार के ख़िलाफ़ मुसलमानों के तीरों से भी ज़्यादा मौअस्सर हैं। बहरहाल हर चीज़ की अपनी जगह पर अहमियत मुसल्लम है।

"और अनक़रीब ये ज़ालिम जान लेंगे कि किस जगह लौट कर जायेंगे!" وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ؑ ۲۲۷

इनको अनक़रीब मालूम हो जाएगा कि वह किस अंजाम से दो-चार होते हैं। ये इसी तरह का मुहावरा है जैसे हमारे यहाँ उर्दू में कहा जाता है कि देखें ऊँट किस करवट बैठता है। यानि अभी इन लोगों को नज़र नहीं आ रहा, लेकिन अनक़रीब वह वक़्त आने वाला है जब क़ुरान का बयान करदा भयानक अंजाम इन लोगों की निगाहों के सामने होगा।

بارک اللہ لی و لکم فی القرآن العظیم و نفعنی و ایا کم بالآیات والذکر الحکیم۔